फ्रेड एंगस्ट के साथ साक्षात्कार

सच्चे समाजवादी समाज के निर्माण के लिए संघर्ष ही असली मुद्दा है!

फ्रेड एंगस्ट (चीनी नाम, यांग हेपिंग) का जन्म 1952 में बिजिंग में हुआ और चीनी गणराज्य की स्थापना के बाद वे पले–बढ़े। उनके अमरीकी माता–पिता एरविन एंगस्ट (दुग्ध उत्पादक किसान) और जोन हिंटन (नाभिकीय भौतिकवादी) द्वितिय विश्वयुद्ध के बाद देश के नव जनवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण में भाग लेने के लिए चीन आए। सांस्कृतिक क्रांति के दौरान फ्रेड ''लाल रक्षक'' थे और बाद में 1974 में अमरीका जाने से पहले पांच सालों तक एक कारखाने में मजदूर के रूपमें काम किया। उन्होंने कॉलेजों में पढ़ाई के साथ–साथ एक दर्जन से अधिक साल तक अंशकालिक रूप से कई कारखानों में काम किए। 1997 में उन्होंने अर्थशास्त्र में पीएचडी हासिल की। 2007 में वे अपने शोध की रुचि की वजह से फिर चीन वापस लौटे। उनके शोध में अन्य चिजों के अलावा समाजवादी अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक क्रांति शामिल है। अभी वे बिजिंग वि ववविद्यालय में अर्थशास्त्र पढ़ाते हैं और ''खुशी कहां है – दो अमरीकियों नें माओ के चीन में ठहरना क्यों पसंद किया'', ''नये गणराज्य का इतिहास–क्रांतिकारियों के नये शासक बनने की कहानी'', ''चीन का उद्भव और इसके निहितार्थ'' इत्यादि विषयों पर कॉलेज के छात्रों को अक्सर व्याख्यान देते हैं। समाजवादी संक्रमण की समस्याएं पर अंग्रेजी और चीनी में उनके कई आलेख प्रकाशित हुए हैं।

ओनुरकैन उल्कर का जन्म और लालन–पालन टर्की में हुआ। शुरूआती दौर से ही उनको मार्क्सवाद और सामाजिक आंदोलनों में रूचि थी। उन्होंने मध्य पूर्व तकनीकी विश्वविद्यालय से राजनीतिक विज्ञान में बैचलर की डिग्री हासिल की और उसी विभाग से अपनी पहली मास्टर की डिग्री हासिल की। येंचिंग विद्वान के रूप में उन्होंने पिकिंग विश्वविद्यालय से मास्टर की दूसरी डिग्री हासिल की। वर्तमान में वे राष्ट्रीय चेंग कुंग विश्वविद्यालय में ताइवान के स्कॉलर ीप पर चीनी भाषा का अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने पहले रिसर्च सहायक, भोधकर्ता और अध्यापन सहायक के रूप में काम किया है। उनके कुछ अनुवाद और आलेख खासकर क्रांतिकारी और पश्च क्रांतिकारी चीन के बारे में, अलग–अलग तुर्की पत्रिकाओं में छपते रहे हें। ''समाजवादी चीन को याद करते हुए, 1949–1976'' (अस्पेक्ट्स ऑफ इंडियाज इकॉनोमी, 59 और 60, 2014) का उनका अनुवाद जल्दी ही प्रकाशित होने वाली है।

ओनुरकैन उल्कर : क्या आप अपने परिचय से इसकी शुरूआत कर सकते हैं?

फ्रेड एंगस्ट : मेरा जन्म 1952 में बीजिंग में हुआ और मेरा लालन–पालन चीन के प्राचीन राजधानी शियान में हुआ। सांस्कृतिक क्रांति के शुरू होने से पहले ही 1966 में अपने परिवार के स्थानांतरण के बाद मैं वापस बीजिंग आ गया। मैंने चीन में अपने जीवन के शुरूआती 20 सालों का अधिकतर समय ि ायान में बिताया और सांस्कृतिक क्रांति के उफान के दौरान के अंतिम 8 साल मैं बीजिंग में रहा लेकिन उस दौर में बीजिंग में उतना उथल–पुथल नहीं था जितना की अन्य जगहों पर। माध्यमिक शिक्षा के बाद मैंने 5 साल अपने सहपाठियों के साथ कारखानों में काम करते हुए बिताये। मेरे कुछ अन्य सहपाठी देहाती इलाकों में चले गए और मैं भी उनके साथ जाना चाहता था लेकिन मुझे इसकी इजाजत नहीं दी गयी क्योंकि मैं एक विदेशी था। बाद में मेरे कुछ प्रयास के बाद मेरे भाई और बहन वहां जाने में सफल हुए। मैं 1974 में अमरीका चला गया और लगभग अगले 30 साल वहां बिताये। मैं अक्सर वापस आता था। 1989 में बीजिंग में घटित घटनाओं से ठीक पहले 1988 में पूरे एक साल यहीं बिताये। फिर मैंने 2000 में पूरे एक साल चीन में अघ्यापन में बिताया। बीच–बीच में मैं अक्सर अपने माता–पिता और सहपाठियों को देखने यहां आता रहता था। अंत में 2007 में मैंने चीन वापस लौटने का फैसला किया। तब से मै यहां अध्यापन और भोध का काम कर रहा हूं। माओ के दौर की राजनीति और अर्थशास्त्र को समझना मेरी दिली इच्छा है। इस लिहाज से अंतिम के मेरे दस साल काफी लाभदायक रहे हैं।

मुल सवाल : किस तरह से एक नये समाजवादी समाज का निर्माण किया जाए?

ओनुरकैन उल्करः आपने माओवादी चीन में अपना लंबा समय बिताया है। माओवाद के पश्चिमी आलोचक आमतौर पर जनता की जरूरत से ज्यादा राजनीतिकरण का आरोप लगाते हैं और इस तरह उनका मानना है कि संस्थाओं और उनकी स्थिरता को कम करके आंका गया है। माओवादी चीन में आम जनता की रोजमर्रा की जिंदगी कैसी थी? क्या तथाकथित जनता की 'जरूरत से ज्यादा राजनीतिकरण' ने वास्तव में उथल–पुथल का माहौल पैदा कर दिया था?

फ्रेड एंगस्ट : हां! यह एक बड़ा सवाल है। इसका जबाब देने के लिए इसका जबाब देना होगा कि क्या आप शोषण का समर्थन करते हैं या फिर शोषण को समाप्त करने का प्रयास करते हैं? दुसरे शब्दों में मुल सवाल यह है कि क्या आप पुराने शोषकों का खात्मा, उनकी जगह नये शोषकों की उत्पति के लिए करना चाहते हैं या शोषण के तंत्र को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए?

क्रांतिकारी जमात में ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने सामंतवाद, दलाल पूंजीवाद और साम्राज्यवाद की तो खिलाफत की है लेकिन उन्होंने अपने आप में शोषण के तंत्र की खिलाफत नहीं की। इसलिए जब क्रांतिकारी लोग एक बार शासक बने तब एक नयी समस्या पैदा हुयी : क्या वे जनता के नाम पर जनता को अपने साथ लेकर शासन चलायेंगे या फिर बस वे नये शोषक बन कर रह जायेंगे? मूल सवाल यह था कि क्रांतिकारियों को नया शासक बनने से कैसे रोका जाए।

1949 से 1956 के पहले सात सालों में माओ के चीन में खेती को सफलतापूर्वक सामूहिक खेती में बदला गया और किसानों की प्रति व्यक्ति आय में तेजी से इजाफा हुआ। उन्होंने निजी उद्योगों को राज्य के मालिकाने या फिर संयुक्त उपक्रम में सफलतापूर्वक तब्दील किया। इस तरह से बुनियादी रूप से वे एक पूंजीवादी, अर्धसामंती समाज के समाजवादी समाज में रूपांतरण में सक्षम हो गए थे। लेकिन जब कारखानों, शहरों और प्रांतों में जनता के सामने समस्यायें आने लगीं तब तात्कालिक रूप से कुछ अन्य सवाल खड़े हो गए। अंतरविरोधों को कुछ नौकरशाही तरीके से निबटाने की वजह से मजदूरों और छात्रों नें हड़ताल शुरू कर दी। इसका एक मशहूर उदाहरण है जिसका जिक्र माओ की चुनी हुयी रचनाओं के पांचवें खंड में किया गया है। सेना हेनान प्रांत में किसानों के रोजी–रोजगार की बिना परवाह किए एक हवाई अड्डा बनाना चाहती थी। वे हवाई अड्डा के निर्माण के लिए सबकुछ ध्वस्त कर देना चाहते थे और किसानों के पास इसे बाधित करने और इसके प्रतिरोध के अलावा कोई भी रास्ता नहीं बचा हुआ था।

ओनुरकैन उल्करः माओ नें इसके लिए सीधे तौर पर देंग शियाओ पिंग को जिम्मेवार ठहराया था....

फ्रेड एंगस्ट : हां! देंग शियाओ पिंग ही इसके लिए जिम्मेवार था। ऐसे ढेर सारे उदाहरण थे। इसलिए यहां मूल सवाल यह है कि कारखानों में प्रबंधकों और मजदूरों के बीच रोज ब रोज पैदा हो रहे अपरिहार्य अंतरविरोधों का हल कैसे निकाला जाए? उत्पादन को किस तरह से संगठित किया जाए? क्या किया जाए इसके बारे में कई अलग–अलग राय और अलग–अलग विचार हैं। ऐसे में नेतृत्व में भाामिल लोग क्या करना चाहते हैं? क्या वे जन दिशा लागू करना चाहते हैं, जनता को सुनना चाहते हैं और एक आम सहमति से एक समाधान ढूंढना चाहते है या फिर जनता को कुचलकर आगे बढ़ना चाहते हैं? ये सवाल मूल रूप से उत्पादन प्रक्रिया को जनतांत्रिक बनाने से जुड़े हुए है।

1956 तक यह एकदम साफ हो गया था कि समाजवादी दौर में दो बिल्कुल अलग तरह के अंतर्विरोध सामने हैं : एक तरफ पुराने जमींदार और पूंजीपति अपनी जमीन और कारखानों पर अपने नियंत्रण के खत्म होने से नाराज थे और समाजवाद को उखाड़ फेंकना चाहते थे। दूसरी तरफ कुछ अन्य तरह के अंतर्विरोध थे जिसका मूल सार यह था कि किस तरह से रोज ब रोज के उत्पादन प्रक्रिया को जनतांत्रिक बनाना जाए। आप किस

तरह से एक स्कूल या खेती का प्रबंधन करते हैं? प्रबंधक और प्रबंधन के बीच के अंतरविरोधों का आप किस तरह से समाधान निकालते हैं? प्रबंधकों के प्राधिकार की सीमा रेखा क्या होगी? इसे उस दौरान ''जनता के बीच का अंतर्विरोध'' कहा गया। इसमें अंतर्विरोध के दोनो पक्षों का कोई विपरीत लक्ष्य नहीं है बल्कि उनके लक्ष्य समान हैं और बस मतांतर इस बात को लेकर है कि इसका हल कैसे निकाला जाए। एक कारखाने को किस तरह से ज्यादा बेहतर और अधिक कुशलता से संचालित किया जाए? चीन को पिछड़ेपन और गरीबी से मुक्ति कैसे दिलायी जाए? इसे एक औद्योगिक राष्ट्र में कैसे तब्दील किया जाए? ये सारे जनता के बीच के अंतर्विरोध हैं और आप इसका समाधान कैसे करेंगे?

1956 में यह बिल्कुल साफ हो गया था कि नये नौकरशाह, नेतृत्व के लोग जनता को कुचलकर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। इसलिए माओ नें नेतृत्व में भाामिल लोगों की आलोचना और पार्टी में सुधार के लिए सौ फुलों को खिलने दो, वाला अभियान भाुरू किया। इस तरह से ''अपनी जुती अपने ही सर'' की कहावत वाली हालत हो गयी। जिन लोगों नें क्रांति के दौरान शोषण के तंत्र के बजाये केवल पुराने शोषकों की खिलाफत की थी और जो लोग नये शासक बनना चाहते थे वे इस भाुद्धिकरण अभियान से बहुत ही असहज महसूस करने लगे। इस तरह वे अपना हमला अपने आलोचना करने वाले तमाम लोगों पर केन्द्रित कर देना चाहते थे।

मुझे लगता है कि कुछ लोगों को यही ''अस्त–व्यस्त'' लगता है। वे पूछते हैं कि चीन के लोग, चीजों का प्रबंधन ''आम'' तरीके से क्यों नहीं करते हैं? यहां ''आम'' शब्द का इस्तेमाल सत्ता में बैठे लोगों के तरीके से है। वे सवाल करते हैं कि चीन में इतना अधिक राजनीतिक उथल–पुथल क्यों है?

वास्तव में उनका सवाल है कि चीन शासन के पुराने तरीकों की तरफ ही क्यों नहीं जाता? चीनी क्यों नहीं बस प्रबंधकों को कारखानों में बॉस बने रहने देते? उन्होंने सत्ता में बैठे लोगों की आलोचना और उनके दृष्टिकोण में बदलाव के प्रयास का रास्ता क्यों चुना? असल में ये लोग अपने दिमाग को बदलने के लिए तैयार नहीं थे। जब उनकी आलोचना हुयी तब वे परेशानी महसूस करने लगे। निशाना बनने की वजह से वे खुद को बहुत ही असुरक्षित महसूस करने लगे। इसी वजह से पार्टी के अंदर के संभ्रांत लोगों ने शुद्धिकरण अभियान को 1956 में ''दक्षिणपंथी विरोधी अभियान'' में तब्दील कर दिया। यह पूरी तरह से एक सौ अस्सी डिग्री का बदलाव था। मैंने भी इससे संबंधित लेख लिखे थे।

मुझे लगता है कि माओ के अंतिम बीस सालों को समझने में यह काफी महत्वपूर्ण है। इस द्वंद्व का हल किस तरह से निकाला जाना था? इसका पहला तरीका था ''बीमारी का इलाज कर रोगी को बचाना''। 1940 के दशक के शुरूआती दौर में येनान शुद्धिकरण आंदोलन के दौरान भी इसी तरीके का इस्तेमाल किया गया था। इसका मूल उद्देश्य शुद्धिकरण अभियानों के द्वारा अंतर्विरोधों को सुलझाना था। इस लिहाज से बड़े अक्षरों वाले पोस्टर और जन सभाओं को पार्टी नेतृत्व को निशाना बनाने के लिए मुख्य औजारों के रूप में इस्तेमाल किया गया। दूसरा तरीका था पार्टी से बाहर की कमजोर कड़ियों के आधार पर नीचे निशाना बनाना। यह तरीका जनता को दुश्मनों के बारे में बताकर उनको गोलबंद कर ''प्रतिक्रियावादी'' होने के आरोपियों पर हमले के लिए तैयार करने पर आधारित था। यहां लक्ष्य ''बीमारी का इलाज कर रोगी को बचाना'' नहीं था बल्कि दूसरे पक्ष को धूल चटाना था। यही दक्षिणपंथी विरोधी अभियान का तरीका था।

अतः आपने जो सवाल उठाया है, उसे इन विरोधों के मद्देनजर देखा जाना चाहिए : एक नये समाजवादी समाज का निर्माण कैसे किया जाए? इसके अभाव में माओ के दौर में घटित घटनाएं महज पागलपन ही दिखेंगी। मुझे लगता है कि आपके सवाल का यही जबाब है।

ओनुरकैन उल्कर : तो आम जनता के रोजमर्रे की जिंदगी में यह किस तरह से दिख रहा था?

फ्रेड एंगस्ट : हां! यह सीधे तौर पर दिख रहा था। हम एक कारखाने को उदाहरण के बतौर लेते हैं। नेतृत्व में शामिल लोग, वर्कशॉप का प्रबंधक किस तरह से उत्पादन प्रक्रिया को संचालित करता है? यदि उत्पादन में गिरावट होती है तब हम क्या करते हैं? पूंजीवादी तरीका सीधा है : वे महज साम–दाम–दंड की रणनीति का सहारा लेते हैं। ''यदि आप कड़ी मेहनत नहीं करते हैं तब हम आपको निकाल देंगे'' या ''आप कड़ी मेहनत करते हैं तब हम आपको अतिरिक्त प्रोत्साहन देंगे''। ''मैं बॉस हूं, चुपचाप मेरी सुनो, मैंने तुम्हे मेहनत करने के लिए काम पर रखा है दिमाग देने के लिए नहीं'। यह पूंजीवादी दृष्टिकोण है। लेकिन यदि मजदूर वर्ग समाज का मालिक है तब आप उत्पादन प्रक्रिया को किस तरह संचालित करेंगे? यदि उत्पादन के साथ कोई समस्या आती है तब हम क्या करते हैं? जो कुछ हो रहा है उस पर चर्चा करने के लिए हमें बैठक बुलानी चाहिए और इसका समाधान निकालना चाहिए। यदि समाज का मालिक मजदूर वर्ग है तब उत्पादन प्रक्रिया का समाधान निकालना मजदूर वर्ग के हित में है। यदि वे इन कठिनाइयों का समाधान निकालते हैं तब वे समझ लेंगे कि अपनी समस्याओं का समाधान करने के मजदूर वर्ग के अंदर अपार ताकत है। यहां ध्यान देने की बात यह है कि वे जो कुछ करते हैं उनके अपने हित की वजह से उनकी संरचनात्मकता में व्यापक स्तर पर विस्तार होता है। जनमुक्ति सेना महज ''बाजरा और राइफल'' से जापानियों और राष्ट्रवादियों को कैसे हराने में सक्षम हुई थी? इसके लिए एक सामूहिक लक्ष्य ही जिम्मेवार था जिसमें शोषण को उखाड़ फेंकने का वि वास भी शामिल था।

कारखाने में भी रोजमर्रा के काम में यही नियम काम करता है। यदि नेतृत्व उत्पादन में अकुशलता के लिए हमेशा मजदूरों को जबाबदेह ठहराता है और समस्या की जड़ों को कभी समझने की कोशिश नहीं करता तब मजदूरों को लगता है कि उनकी राय की कोई अहमियत नहीं है। यदि वे खुद की राय की कद्र नही किए जाने और खुद के शक्तिविहीन होने की भावना से भरे रहेंगे तब वे शिथिल पड़ते जायेंगे। वे पहलकदमी नहीं लेंगें। जब वे एक समस्या देखते हैं, उदाहरण के लिए जब वे मशीन में खराबी देखते हैं तब वे इसको ऐसे ही छोड़ देंगे। वे समझेंगे कि यह उनकी समस्या नहीं है। लेकिन यदि उनमें सहभागी होने की भावना रहेगी, यदि उनके पास नेतृत्व की आलोचना का अधिकार रहेगा, यदि वे यह राय देने में सक्षम होंगे कि क्या किया जाए और उनकी राय पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया जाए, यदि उनको सच में लगने लगे कि वे अपने भाग्य के मालिक हैं तब कठिनाइयों से निबटने में उनकी क्षमता अपार हो जाती है।

इस लिहाज से हमारे पास कुछ उलटे उदाहरण भी हैं। माओ द्वारा दिया गया एक मॉडल ताचाई था। मैं इस उदाहरण से बहुत घनिष्ठ भी रहा हूं : मैं कई बार ताचाई आता–जाता रहा हूं और वहां लगभग 6 महीने तक ठहरा हूं। मैंने वहां किसानों के साथ काम किया था और अगल–बगल के इलाकों में भी गया था। आप ताचाई में देख सकते थे कि किस तरह एक मजबूत नेतृत्व नें किसानों का नेतृत्व किया और वे अक्सर इसकी बात करते थे कि हम बिना किसी विदेशी निवेश या विदेशी मशीनरी के अपनी मेहनत के बदौलत किस तरह से एक पिछड़ी खेती का विकास कर सकते हैं। यह अपने आप में एक बड़ी बात है। इसके इतर शियाओगैंक्न गांव का भी उदाहरण है जिसको सुधार के बाद देंग द्वारा प्रोत्साहित किया गया था। उस गांव में 18 परिवार थे जो हमेशा कहा–सुनी करते रहते थे। जब आपके परिवार का कोई व्यक्ति कार्यदल का मुखिया बनता है तब आप सामूहिक संपति का गबन करने की कोशिश करते हैं। तब हम हमेशा आपकी क्षमता और प्राधिकार को कम करने के लिए लड़ते थे। जब अगला चुनाव आया तब मुझे आपको हटाकर **सामूहिक के प्रधान बनाया जाता है**। अब मैं खुद था जो गबन करने की कोशिश कर रहा था और आप थे जो मेरी शक्तियों के खिलाफ लड़ रहे थे। भूमिका में बदलाव.....जाहिर तौर पर एक सामूहिक को तो इस तरह से नहीं चलाया जा सकता है। सुधार के बाद देंग शियाओ पिंग ने शियाओगैक्न को एक ''मॉडल'' के रूप में पेश किया मानो चीनियों ने हजारों सालों में कभी छोटे, और निम्न स्तर के किसानी को देखा ही नहीं था। यह तो काफी हास्यास्पद है! यही बड़ा फर्क है....

जब मजदूर वर्ग सत्ता में था

ओनुरकैन उल्करः आपने अभी उत्पादन को बढ़ाने की समस्या के बारे में माओ के समाजवादी विचारो और पूंजीवदी विचारों के बारे में बुनियादी फर्क के बारे में बताया है। मुझे लगता है कि यह विरोध बुनियादी रूप से ज्ञान के सिद्धांत में निहित है। माओवादी दृष्टिकोण की ज्ञान मीमांसा आधारशिला जिसकी धारणा है कि मेहनतकश जनता उत्पादन में सीधे हिस्सेदारी के जरिए ही सामाजिक वास्तविकता का ज्ञान हासिल करती है और पूंजीवादी दृष्टिकोण की धारणा है कि मानसिक और शारिरिक श्रम के बीच के भेद को बरकरार रखने की वकालत करता है–पूरी तरह अलग–अलग हैं। मुझे लगता है कि जिन चीजों नें पहाडों के उपर से लेकर गांवों में नीचे तक के आंदोलन को नेतृत्व दिया था वह यही माओवाद की अनोखी ज्ञान मीमांसा थी। शिक्षित युवाओं को गांवों या कार्यशालाओं में ज्ञान के असली मालिकों, मजदूरों और किसानों से सीखने के लिए भेजा गया। आपने भी उस समय शारिरिक श्रम में हिस्सेदारी की थी। आपने अपने अनुभवों और श्रमिकों से उस समय क्या अनुभव हासिल किए थे? क्या अब भी आपको लगता है कि माओ की परिकल्पना सही थी?

फ्रेड एंगस्ट : जाहिर तौर पर हां! लेकिन मूल बात है कि पूंजीवाद में उत्पादन का लक्ष्य अलग होता है। उदाहरण के लिए खेती के औजारों में सुधार आमतौर पर उन इंजीनियरो द्वारा नही किया जाता जो कार्यालय में बैठकर मशीन डिजाइन करते हैं। आम तौर पर वे किसान ही होते है जो मशीनों में गलतियां ढूंढ़ते हैं। उदाहरण के लिए अमरीकी किसानों के खेत में एक छोटी कार्यशाला होती है। वे वहां मशीनों में बदलाव करते हैं। मशीनों के डीलर यहां आते है, देखते हैं, उनकी कल्पना की चोरी करते हैं और फिर इसे पूर्ण बनाते हैं। लेकिन ज्ञान तो जाहिर तौर पर व्यवहार से ही आती है और यही तमाम विचारों का स्त्रोत भी है। पूंजीवादी बुद्धिजीवी और इंजीनियर उन चीजों में सुधार करते हैं। निःसंदेह कारखाने में बिना औपचारिक शिक्षा वाले मजदूर इसको ठीक तरह से सैद्धांतिक रूप से सूत्रबद्ध नहीं कर पाते। लेकिन अंतिम विश्लेषण में श्रमिकों का संचित व्यवहार ही ज्ञान का मुख्य श्रोत है।

इसी वजह से माओ नें श्रमिकों को बुद्धिजीवी बनाने बौर बुद्धिजीवियों के शारीरिक श्रम में शामिल कराने की वकालत की थी। इन दोनों को जोड़ना काफी महत्वपूर्ण था। हां! ज्ञान का सिद्धांत इसका एक पहलू जरूर है। लेकिन अमरीका और माओ के दौर में चीन में मेरे काम के अनुभव नें मुझे सिखाया कि मुख्य पहलू उत्पादन का लक्ष्य है। अमरीका में श्रमिकों के रूप में अपनी नौकरी को गंवाने के डर से प्रबंधक को कोई भी तकनीकी सुधार का सुझाव देने का प्रयास आप नहीं करेंगे। मेरा मतलब है कि आप ऐसा सुझाव दे सकते हैं जिससे उत्पादन में और कुशलता आयेगी लेकिन इसकी वजह से किसी को अपनी नौकरी गंवानी पड़ सकती है। इसलिए मजदूर हमेंशा मशीनरी और उत्पादन प्रक्रिया को बाधित करते हैं चूंकि वे प्रबंधकों के साथ खड़े नहीं हो सकते; जब उन्हे पक्ष लेने को बाध्य किया जाता है तब वे हमेशा उनकी उलटी दिशा में खड़े होते हैं। पूंजीपति हमेशा कहते हैं, ''हम एक ही नाव पर सवार हैं'। निःसंदेह यदि कंपनी डूब जायेगी तब मजदूरों को अपनी मजदूरी और नौकरी गंवानी पड़ेगी। इस परिप्रेक्ष्य से आप ''एक ही नाव पर सवार हैं''। लेकिन आपको मालूम है कि पहले हमें अपनी नौकरी गंवानी होगी। उसके बाद ही पूंजीपति अपना धन गंवायेगा। ''उनके दिवालिया'' होने का मतलब बस इतना है कि उनकी पहुंच नही है लेकिन वे इसके बावजूद बने रहेंगे।

माओ के चीन में उत्पादन का लक्ष्य बिल्कुल अलग था। नेता आपकी न तो मजदूरी हड़प सकते हैं न ही आपको नौकरी से निकाल सकते हैं। मजदूर दो टूक जबाब दे सकता था यदि उसे लगे कि प्रबंधक सही चीज करने को नही कह रहा। मेरे कहने का मतलब है कि कुछ अनुशासनिक नियम जरुर थे लेकिन कार्यस्थल में लोगों में अवधारणा थी कि वे सब मिलकर काम कर रहे थे। नेताओं को क्या करना है यह निर्देश देने की जबाबदेही जरूर थी लेकिन इन निर्देर्शों को मजदूरों के तर्क संगत होना चाहिए था। यदि कोई नेता अपने कार्यालयों में बैठकर चाय की चुस्कियां ले रहा हो, अखबार पढ़ रहा हो और यह निर्देश दे रहो कि क्या करना है तब आप उससे तुरंत ही यह कह सकते थे, ''बाहर निकलिए और यहां आइए! हम सबके साथ काम कीजिए!'' मजदूरों को ऐसा करने का अधिकार था। कौन नेता बनेगा, इसे भी मजदूरों की सहमति से ही निर्धारित किया जाता था। इसे संसदीय राजनीति के लिहाज से नहीं लिया जा सकता लेकिन यदि मजदूर नेता को बदलने की मांग करते और उनकी मांगों को प्रबंधन द्वारा नहीं स्वीकार किया जाता था तब वे

हड़ताल पर जा सकते थे या काम को धीमा कर सकते थे। इस तरह से किसी भी व्यक्ति को प्रभावशाली बनने के लिए मजदूरों की सहमति जरूरी थी। मैं फिर से याद दिला दूं कि इसमें मुख्य बात यह थी कि नेता न तो मजदूरों को काम से निकाल सकता था न हीं उनका वेतन काट सकता था। अतः यदि मैं आपका नेतृत्व करना चाहता हूं तब मैं आप पर दबाव नहीं बना सकता। मैं केवल सहमति और तर्क से ही आपका नेतृत्व कर सकता हूं। पूंजीवादी उत्पादन संबंध और समाजवाद के बीच यही बुनियादी फर्क है। जाहिर तौर पर यह उत्पादन प्रक्रिया में सुधार में जनता के लिए प्रेरणा का एक स्त्रोत था। जैसा कि मुझे याद है मजदूर काफी सुझाव देते थे। चीजों के समाधान के बारे में लोगों में काफी तरह के अलग–अलग विचार थे। कभी–कभी सांस्कृतिक क्रांति के दौरान दो धड़ों के बीच ऐसे दुश्मनागत संबंध हो जाते थे कि कुछ जगहों में उनके बीच हथियारबंद संघर्ष तक की नौबत आ जाती थी। खैर यह दूसरी कहानी है.....

कुछ लोगों का कहना है कि माओ के दौर में श्रमिक वर्ग कभी भी सत्ता में नहीं रहा। मैं इसे खारिज करता हूं। तथ्य तो यह है कि धड़ों के बीच विरोध का हथियारबंद संघर्ष तक की हालत में पहुंच जाना स्वाभाविक रूप से यह दीखता और साबित करता है कि श्रमिक वर्ग सत्ता में था। श्रमिक वर्ग के बिना सत्ता में रहे जमीनी संगठनों के लिए यह कतई संभव नहीं होगा कि कारखानों को चलाने के सवाल को लेकर लड़ बैठें। हां! यह सही है कि गुटों की बीच लड़ाई ठीक नहीं है और यह श्रमिक वर्ग के लिए सबसे ज्यादा विनाशकारी था। लेकिन यह भी साबित करता है कि माओ के दौर में श्रमिक वर्ग सत्ता में था। यह इतिहास की विडंबना है।

ओनुरकैन उल्करः क्या आपने कारखानों में काम करने के दौरान इस तरह के गुटीय संघर्ष को सीधे तौर पर देखा था?

फ्रेड एंगस्ट : मेरे कारखाने में तो हमने ऐसा कभी नहीं किया। लेकिन हमने कई हिंसक लड़ाइयों की खबरें सुनी थीं। सांस्कृतिक क्रांति के शुरूआती दौर में मैं जब एक कोयले की खदान में गया, तब वहां कुछ बहस हो गयी थी। वहां भाायद कोई धक्का–मुक्की नहीं हुयी थी। लेकिन खदान नेतृत्व के पक्ष वाले संकीर्ण गुट और इनकी आलोचना करने वाले विद्रोही गुट दोनों बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिख रहे थे, प्रदर्शन कर रहे थे, जुलूस निकाल रहे थे,,,,,,हमलोगों ने भी कई रैलियों में हिस्सा लिया था।

माओ के चीन में श्रमिक वर्ग समाज का मालिक था। ऐसे में श्रमिकों के बीच जब कई सारे अलग–अलग विचार हैं, तब इसका हल आप किस तरह निकालने जा रहे हैं? यह मुख्य मुद्दा है। आज, लोग हमे ाा ''लोकतंत्र'' की बातें करते हैं। हालांकि कई मामलों में यह एक झूठ है! माओ के चीन में रोज ब रोज सक्रिय लोकतंत्र लागू किया गया था। भगवान के लिए बस हमें इतना बता दीजिए कि अपनी बात के सही होने के समर्थन में लगातार तर्क करना और यहां तक कि धक्का–मुक्की करने के लिए तैयार हो जाना, यह यदि श्रमिक वर्ग का सत्ता में होना नहीं है तो मुझे बताइये कि यह क्या है?

शहर और गांव, मानसिक और शारोरिक श्रम

ओनुरकैन उल्करः तो माओवादी चीन में आपके अनुभवों नें किस तरह से बौद्धिक श्रम और शारीरिक श्रम के बीच संबंधों के बारे में आपकी राय को किस तरह से आकार दिया।

फ्रेड एंगस्ट : कहने के लिए तो ढेर सारी बातें हैं लेकिन वास्तव में मैं अपने माता–पिता (एरविन एंगस्ट और जोन हिल्टन) से ज्यादा प्रभावित था और उनपर भी अपने माता–पिता का प्रभाव था। मेरी नानी मां (कारमेलिटा हिंटन), जिन्होंने पट्ने स्कूल का गठन किया था – जिसमें करके सीखने पर सबसे ज्यादा जोर दिया था। उनके विद्यालय में एक खेत था जिसके छात्र गायों की देखभाल करते थे और उसका दूध निकालते थे। वहां खेल–कूद की अच्छी व्यवस्था थी और उसमें बच्चे निर्जन जगहों में जाकर वहां बचे रहना और ऐसे ही अन्य

चीजें सीखते थे। इसमें ''खुद करके सीखने के दृष्टिकोण'' पर काफी जोर था और मेरी मां ने भी ऐसी ही शिाक्षा हासिल की थी। मेरे पिता एक दुग्ध उत्पादक किसान थे और उनका भी खुद अपने हाथों से करने पर काफी जोर था।

लेकिन चीन में ढेर सारे संभ्रांत राय हैं। बुद्धिजीवी खुद को श्रेष्ठ समझते हैं और श्रमिक वर्ग खुद को हीन। श्रमिक हमेशा उन लोगों के सामने नतमस्तक हो जाते हैं जिनके पास अधिक ि ाक्षा है, जो ज्यादा जानकार हैं, जिनके पास ज्यादा प्राधिकार है.....जब मेरे माता–पिता चीन आये, उन्होंने ऐसे नाक भौंव सिकोड़ने वाले बुद्धिजीवियों को काफी तुच्छ समझा। मैं इन सबसे बहुत प्रभावित था। ऐसे में मैं कह सकता हूं कि इन सबके बीच ही माओ के चीन में हमारा लालन–पालन हुआ और मेरे माता–पिता के प्रभाव की वजह से ही आज मेरे विचार ऐसे हैं।

ओनुरकैन उल्करः आज महज प ि चम में ही नहीं बल्कि चीनी अकादमिक में भी जिन पढ़े लिखे नौजवानों को राजनीतिक अभियानों में लगाया गया था और माओ के दौर में कारखानों या गांवों में भेजा गया था, को अक्सर ''गुमराह पीढ़ी'' कहा जाता है। इसमें वो लोग भी भाामिल हैं जिन्हें महज उपरी स्तर पर सत्ता संघर्षों की वजह से अपनी जान गंवानी पड़ी जिनका वास्तव में इससे कोई लेना देना नहीं था। आप इस राय के बारे में क्या सोंचते हैं?

फ्रेड एंगस्ट : मैं इससे एकदम सहमत नहीं हूं। सबसे पहले यह महज सत्ता के लिए संघर्ष नहीं था, बल्कि यह समाजवाद के निर्माण का मुद्दा था जिसकी चर्चा मैं पहले ही कर चुका हूं। ''सत्ता संघर्ष'' शासकों के बीच और शोषितों के बीच भी हो सकता है। इसमें कोई शक नहीं है कि उस समय चीन में पूंजीवादी राहियों के बीच भी काफी सत्ता संघर्ष था। ऐसे में माओ के दौर में जो कुछ हुआ इसमें पूंजीवादी राहियों के बीच का सत्ता संघर्ष तथा मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच बदलाव के राह के चुनाव से संबंधित उचित संघर्ष दोनों भाामिल है।

नीचे भेजे गए युवकों से संबंधित जो सवाल आपने पूछा है इसके बारे में मैं कह सकता हूं कि यह काफी विवादास्पद है। मुझे लगता है कि जो लोग ग्रामीण इलाकों में युवकों को भेजने के निर्णय की आलोचना करते हैं, वे कभी भी चीनी समाज के बुनियादी संरचना जिसमें जनसंख्या का बहुमत हिस्सा किसानों का है, के आधार पर इसका विश्लेषण नहीं करते हैं। यह सच है कि नीचे भेजे गए युवक उस समय के भाहरों में समृद्ध लोगों में से आते थे। ''समृद्ध'' से मेरा आशय शहरों के उन लोगों से है जिनको ग्रामीण इलाकों के लोगों से काफी अधिक सुविधाएं मिली हुयी थीं। यह औद्योगिकरण की आव यक प्रक्रिया का एक अपरिहार्य परिणाम था। यहां आव यक इसलिए चूंकि चीन एक बहुत ही पिछड़ा हुआ और गरीब मुल्क था। अब सवाल यह था कि आप इसका औद्योगिकरण कैसे करेंगे? आपको एक तरह के आदिम पूंजी संचय की जरूरत पड़ेगी। चीन उस तरह से इसको हासिल नहीं कर सकता था जिस तरह से ब्रिटिश लोगों नें कुछ सौ साल पहले खेतों की बाड़ाबंदी करके वहां से किसानों को मार भगाकर हासिल किया था। या फिर चीन पूंजी संचय किसी दूसरे देश के शोषण के जरिए नहीं कर सकता था। ऐसे में औद्योगिकरण के लिए इसे कहां से पूंजी हासिल होती जहां आबादी का बहुमत किसान था ? 1950 के दशक के शुरूआती दौर में चीन की 80 फीसदी से अधिक आबादी अभी भी देहाती इलाकों में ही थी।

चीन को या तो किसानों पर कर लगाना पड़ता चूंकि वे आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा थे या फिर औद्योगिक उत्पादों का कृषि उत्पादों के साथ ''असमान विनिमय'' की प्रक्रिया में शामिल होना पड़ता। कर लगाने की प्रक्रिया काफी खर्चीली थी और इसे बनाये रखना मुश्किल था। इसलिए राज्य नें औद्योगिक उत्पादों जिनका मूल्य उसकी वास्तविक लागत से काफी अधिक था और कृषि उत्पाद जिनका मूल्य उसके वास्तविक लागत से काफी कम था, के बीच विनिमय को औद्योगिकरण के लिए पूंजी संचय के एक तंत्र के रूप में स्वीकार

किया। इसमें सफल होने और औद्योगिक उत्पादों और कृषि उत्पादों के बीच 'सिजर्स गैप'[1] को टालने के लिए जिसका अंत व्यापारियों के जेब भरने पर होता है, चीन नें कृषि उत्पादों का एकाधिकार बनाया। अनाज की खरीदारी के एकाधिकारी तंत्र में आवास परमिट को भी जरूरी बनाया गया। इसके अनुसार शहरों के तमाम लोगों को उनके लिए अनाजों की आपूर्ति कम दामों पर होती थी और इससे कम मजदूरी वाले श्रमिकों को फायदा होता था। अनाज को किसानों से कम दाम पर खरीदा जाता लेकिन औद्योगिक उत्पाद (कपड़े या थर्मस बोतल जैसे हल्के उद्योग, टॉर्च, वाश बेसिन समेत) किसानों को मंहगे दामों पर मिलता था। इस तरह भुरूआती औद्योगिकरण के लिए इस तरह के असमान विनिमय की काफी जरूरत थी।

उदाहरण के लिए इसने चीन में कपड़ा उद्योग के मजदूर के एक साल के श्रम के उत्पाद को खेती में लगे दर्जनों या फिर सैंकड़ों किसानों के साल भर के श्रम के उत्पाद से विनमय को संभव बनाया। इसका कारण बहुत ही आसान थाः आपको औद्योगिकरण के लिए खदान, इस्पात, मशीनरी उत्पादन, भवन और ऐसे ही अन्य चीजों की जरूरत होगी। किसानों को इन चीजों की जरूरत नहीं रहती। कोयला निकालने, लौह अयस्क निकालने, लौह अयस्क को पिघलाने, मशीनरी के निर्माण, एक सिलाई मशीन या कपड़े के निर्माण के लिए मशीनरी के निर्माण के लिए एक औद्योगिक निर्माण की बड़ी श्रृंखला चाहिए जिसके मजदूरों के लिए खाना चाहिए। खाना कहां से आता है? किसानों से! इसी वजह से असमान विनिमय को औद्योगिक प्रक्रिया को शुरू करने के लिए चुना गया। यही इसका मुख्य कारण था।

यह किसानों के भी दीर्घकालीन हित में था। क्योंकि भविष्य के किसानों को छोटी खेती में ठहरने की जरूरत नहीं रह जायेगी। औद्योगिकरण उनको हाड़तोड़ मेहनत से आजादी दिलायेगा। इसके बजाए वे ट्रैक्टर का इस्तेमाल करेंगे। लेकिन ट्रैक्टर के इस्तेमाल के लिए आपको स्टील चाहिए। स्टील के लिए आपको लौह अयस्क और कोयले की जरूरत पड़ेगी। ये तमाम चीजें ऐसी नहीं हैं जिसे शुरूआती दौर में किसान खरीद सकें। लेकिन सामूहिकीकरण नें किसानों को म ाीनरी की खरीदारी लायक सक्षम बना दिया। और इसने भाहरों में अनाज की आपूर्ति को भी सरल बना दिया। इसलिए यह हुको व्यवस्था या आवास परमिट व्यवस्था का रीढ़ था।

लेकिन हमें विपरीत की एकता को हमेशा अपने दिमाग में रखना चाहिए। हरेक चीजों के दो पहलू होते हैं। जो मैं कहना चाहता हूं इसके लिए चीनियों के पास एक बढ़िया भाब्द है ''नाइ'' (“Wúnài”)। इसका शाब्दिक अर्थ ''सबसे बुरी संभव परिस्थिति में सबसे बेहतर'' या ''बेहतर विकल्प के अभाव में सबसे बेहतर उपाय'' है। बेहिचक असमान विनिमय उस समय चीन के लिए पूंजी संचय के लिहाज से सबसे बेहतर विकल्प था। लेकिन इसके गौण दुष्प्रभाव भी थे। क्योंकि इस व्यवस्था की वजह से शहरों के लोग यह समझने लगे कि उनकी मेहनत किसानों के मेहनत से अधिक कीमती है। यह बिल्कुल सही नहीं था; असमान विनिमय तो राज्य द्वारा अनाज के एकाधिकरण का एक नतीजा भर था।लेकिन इसके परिणामस्वरूप शहरों के लोगों ने खुद को उत्कृष्ट समझना भुरू कर दिया। उनके पास खाने और सस्ते दर पर कपड़ों इत्यादि चीजों की गारंटी थी। और किसान मनमाने तरीके से शहरों की तरफ पलायन नहीं कर सकते थे चूंकि अनाज की राशनिंग थी। जब आप शहर आयेंगें तब आपके पास खाने को कुछ भी नहीं रहेगा और आप जीवित नहीं रह सकते। शहरों में केवल शहरी आबादी के लिए ही अनाज की गारंटी थी। ऐसे में यदि आपने शहर जाना तय किया है तब आपको अपने गांव से आपको अपना अनाज साथ में लाना पड़ता। पूंजीवादी उदारवादी कहते हैं कि यह जनता के आने जाने की आजादी पर एक प्रतिबंध थी। असल में आप देख सकते हैं कि लैटिन

[1] 1923 में सोवियत संघ में नई आर्थिक नीति के दौरान औद्योगिक और खेतिहर उत्पादों के दाम के बीच भारी अंतर हो गया था। इसे सिजर्स संकट कहा जाता है। इसके बाद औद्योगिक उत्पादों और खेतिहर उत्पाद की खाई को बताने के लिए 'सजर्स गैप' का इस्तेमाल होने लगा।

अमरीका, भारत और अन्य आर्थिक रूप से कम विकसित देशों के तमाम झुग्गी–झोपड़ियों में यह ''आजादी'' कैसे काम कर रही है!

खैर इस व्यवस्था का नकारात्मक पहलू यह था कि भाहरों में शिक्षा के तमाम साधन, इलाज की सुविधाएं, कला, साहित्य जैसी तमाम सुविधाए थीं। भाहरी लोगों के जीवन में प्रगति ग्रामीण जनता के जीवन में प्रगति से काफी तेज थी। यह विभाजन पुरानी पूंजीवादी व्यवस्था की विशेषता थी और यह समाजवादी समाज में भी बरकरार था। गांव और भाहरों के बीच विभाजन केवल पहले से ही अधिक नहीं था बल्कि और बढ़ रहा था। इसके लिए आप क्या कर सकते थे?

इसलिए युवकों को गांवों में भेजना सही था। क्यों? पहले इसने शहरी लोगों को किसानों को एक हद तक बदला चुकाने में मदद की। वे अपनी विशेषज्ञता और ज्ञान को गांवों तक ले गए। और शहरी युवाओं का गांवों में देखना उनको एक स्पष्ट संदेश भी देता था कि यह मत सोचिए की शहरों में जो आपको सुविधाएं मिली हुयी हैं वे आपका स्वाभाविक अधिकार है। आपको यह भी सोचना होगा कि किसान और व्यापक जनता इस देश में किस तरह से अपना गुजारा–बसर करती है!'' यही चीन का रीढ़ था। आप कह सकते है कि यह सबसे उन्नत तरीका नहीं था लेकिन ऐसे सवालों का कोई मतलब नहीं है। यह शहरी लोगों के लिए किसानों का कर्ज उतारने का एक तरीका था जिसे उन्होंने समाज में अपने विशेष स्थिति से हासिल किया था।

शुरू में तमाम युवाओं नें इस नीति का समर्थन किया था। वे इसके कष्ट जानते थे और उन्होंने इन सबका सामना भी किया। वे समझते थे कि गांवों की मदद करना उनका कर्तव्य था। दुर्भाग्यवश कई चीजें एक ही साथ हो गयीं। ''तीन कठिन सालों'' (1959–1961) के बाद 1960 के दशक तक धीरे–धीरे सिजर्स गैप काफी घट गया था। (सांस्कृतिक क्रांति के पहले सालों 1966–1967 इसके अपवाद हो सकते हैं)। औद्योगिक उत्पादों के मूल्य में गिरावट और कृषि उत्पादों के मूल्य को बढ़ाया जाना चाहिए। लेकिन देश गतिरोध की हालत में था। चीन के भविष्य को लेकर संघर्ष जारी था। कई चीजों पर गौर करने की हालत नहीं रह गयी थी। इसलिए उनको एक तरफ युवकों को गांवों में भेजना पड़ा तो दूसरी तरफ सिजर्स गैप को कम किया गया था। लेकिन इसी समय चिंता की कई बातें थीं और ऐसे में उन्होंनें मुख्य अंतरविरोध को समझना चुना।

जब देंग सत्ता में आया तब उसने गांवों में युवकों को भेजने की नीति पर रोक लगा दी। आज लोगों का कहना है कि देंग ने इसलिए इस नीति को रद्द कर दिया था चूंकि युवकों ने विद्रोह करना शुरू कर दिया था। लेकिन युवकों ने विद्रोह करना क्यों शुरू किया एक ऐसा विषय है जिसपर कोई अध्ययन नहीं करता। कम से कम ऐसा अध्ययन मेरी जानकारी में तो नहीं है...। माओ के दौर में युवकों नें इस नीति के खिलाफ विद्रोह नहीं किया था। उन्होंने 1977 में विद्रोह किया जब देंग ने परीक्षा व्यवस्था को खुला कर दिया। तमाम संभ्रांत लोगों नें कॉलेजों के लिए गांव छोड़ दिया। किसानों के साथ गांव में काम करने वाले युवकों के बारे में कल्पना कीजिए। उन्होंने अचानक यह महसूस करना शुरू किया : ''अरे, अब मुझे समझ आया! मुझसे अपेक्षा की जाती है कि मैं पूरा जीवन गांव में रहूं लेकिन आप जा सकते है!'' इसने दृढ़ता और सहमति को तोड़ दिया और इसने युवकों की इच्छाओं को नष्ट कर दिया।

ओनुरकैन उल्करः इस तथ्य को ''विकृत साहित्य'' में ठीक से वर्णित नहीं किया गया है...

फ्रेड एंगस्ट : हां! यही मैं कहना चाहता हूं। मैं पूरी तरह उन वजहों से सहमत हूं जिसके कारण उन्होंने विद्रोह किया। जब सब कोई साथ था तब तमाम चीजें ठीक थीं। लेकिन जब ये सामने आने लगा कि कुछ लोग ''अन्य लोगों की तुलना में अधिक समान'' थे, तब नौजवान उठ खड़े हुए।

ओनुरकैन उल्करः गांवों में भेजे गए कई युवकों ने अपनी संस्मृतियां लिखी हैं। लेकिन उन्होंने माओ के गुजर जाने के बाद किए गए इस नीति में बदलाव की वास्तव में आलोचना नहीं की है। उन्होंने वास्तव में माओ के दौर को और खासकर समग्र रूप से गांव में भेजे जाने के अभियान को निशाना बनाया है।

फ्रेड एंगस्ट : हां! मैंने भी देंग के सत्ता में आने से पहले इस नीति के खिलाफ युवकों के विद्रोह से संबंधित कोई भी दस्तावेजीकरण नहीं देखा है। यह बिल्कुल सही है कि वहां ढेर सारी तकलीफें और कठिनाइयां थीं। 1975 में एक गोपनीय आंदोलन चल रहा था जो एक तरह से 1977 में गांव में जाने की नीति कि खिलाफ आंदोलन की तरह ही इसके पहले का आंदोलन था। जब मैं गांव में युवको को भेजने की आलोचना करने वाले युवकों से शंघाई में मिला था तब मैंने उनसे एक आसान सा सवाल पूछा थाः '' शंघाई में आपके लिए ह्यूकाउ (hùkǒu) की सुरक्षा क्यों है? गांवों में बहुमत किसानों के लिए आप क्या कर रहे हैं?'' उनका सीधा कहना था : ''ये मेरी समस्या नहीं है!'' व्यक्तिगत स्तर पर इन युवकों में प्रताड़ित होने की भावना थी। हालांकि अधिकतर लोगों में जिन्होंने गांव में भेजे जाने की नीति की आलोचना भी की थी, के पास उस जीवन के बारे में अविस्मरणीय अनुभव थे। गांव में ठहरना उनके लिए कठीन जरूर था लेकिन उनके अंदर उन दिनों की ढेर सारी यादें थीं। उनमें से अधिकतर लोगों का कहना था, ''हम अपने नौजवानों के पास वापस जाना चाहते हैं, हम वापस उस जीवन में जाना चाहते है।'' हालांकि मेरा अबतक ऐसे साहित्य से भी सामना नही हुआ है जिसमें पूंजीवादी समाज में कारखानों में काम करने गए लोगों के अनुभवों का बहुत ही गुणगान हो। उदाहरण के लिए, अमरीकी साहित्य में आपको ऐसे नौजवान मजदूर नहीं मिलेंगे जो अपने कारखाने के दिनों की महानता के बारे में बात करने वाले हों। मैंने कईं साल अमरीकी कारखाने में भी काम किया था। लेकिन मेरे पास वहां कोई ऐसा अनुभव नहीं था जिस तरह का माओ के चीन में था।

ऐसे लोग असल में यह नहीं देखते है कि आमतौर पर नीति के खिलाफ होने के बाद भी अपने अनुभवों को याद करते थे जिसमें समान होने, एक साथ होने की भावना शामिल थी। एक कारखाने में शोषित होने का साझा अनुभव कोई ऐसी याद नही है जो आप याद करना चाहें। इसका कोई मतलब नहीं है कि आप कितनी कड़ी मेहनत करते हैं बल्कि कुछ नया निर्माण के लिए, ''नये चीन'' के निर्माण के लिए एक साथ काम करने का साझा अनुभव याद करने लायक बन जाता है। अमरीका में इस तरह का महिमा गान आपको केवल अमरीकी सेना के लोगों के पुराने दिनों के बारे में ही मिलेगा। नौसैनिको और अमरीकी विशेष सेना से छुट्टियों में उनके पास अपने अतीत के अनुभवों से संबंधित कई सारी मजेदार यादें होती हैं। चूंकि सेना में एक तरह की टोली होती है इसलिए आप सबके साथ कुछ करते हैं। बेहिचक इस मामले में यह साम्राज्यवाद के लिए है। हालांकि मनोवैज्ञानिक नजरिए से सेना में सेवा आपको एक साथ काम करने का विवेक देता है। यह ऐसी चीज है जो आपको एक पूंजीवादी कारखाने में काम करते हुए नहीं मिलता।

असली ''चीनी चमत्कार'' समाजवाद था

ओनुरकैन उल्करः माओ के बाद के दौर में चीनी आधिकारिक विमर्श में समाजवाद महज आर्थिक विकास या मामूली जीडीपी वृद्धि तक सिमट़कर रह गया है। हालांकि हमें मालूम है कि माओ के लिए समाजवाद का मतलब इससे काफी अधिक था। उनके लिए वर्गविहीन समाज में धीरे–धीरे संक्रमण की प्रक्रिया मेहनतकशों के लिए सीधे लोकतंत्र की स्थापना की एक प्रक्रिया भी भी। ऐसे में मेरा सवाल यह है कि क्या माओवादी चीन में ऐसा था?

फ्रेड एंगस्ट : निःसंदेह, माओ के दौर की नीतियों का पक्ष लेने वाले इसके जनवादी पहलुओं पर ढेर सारी बातें कर सकते हैं। लेकिन हमें पूंजीवादियों द्वारा फैलाये गए पूरी तरह गलतबयानी को बेनकाब करने में कमजोर नहीं होना चाहिए। इन पूंजीवादियों का कहना है कि माओ के बाद के दौर में आर्थिक वृद्धि की दर ज्यादा तेज है, जो कि एकदम गलत है। पिछले कुछ महीनों में मैंने वृद्धि दर में तुलना के लिए नेशनल ब्यूरो ऑफ स्टटिस्टिक्स ऑफ चाइना के आंकड़ों पर नजर दौड़ाई है। हां! जीडीपी मापने का एक तरीका है।

लेकिन जीडीपी को आधार बनाने के बजाए मैंने अनाज उत्पादन, कपड़ा उत्पादन, रेल–सड़क परिवहन, बिजली उत्पादन, कोयला उत्पादन और आर्थिक वृद्धि के कुछ बुनियादी मापकों को आधार बनाया। मैं यह देखकर दंग रह गया कि कपड़ा उत्पादन और जीडीपी आंकड़ों के अलावा अन्य क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की गति माओ के दौर में देंग के दौर से अधिक उंची थी। सच्चाई तो यह है कि माओ के दौर में जीडीपी का कोई वजूद ही नहीं था और बाद में इसे अधिकारियों द्वारा गढ़ा गया है। माओ के दौर में सेवा क्षेत्र की भी गणना नहीं की जाती थी!

माओ के दौर में हमारे पास कारखानों में भी भायनगृह, कैफेटैरिया, बाल कक्ष, पुस्तकालय, और वाणिज्य स्कूल थे। इन तमाम चीजों की गीनती जीडीपी में भामिल नहीं की जाती है। लेकिन जब आप इसे अलग–अलग कर देतें हैं तब से सभी जीडीपी में गिने जाने लगते हैं। इसलिए जब इस तथ्य को ध्यान में रखा जाए तब यह देखा जा सकता है कि ''उथल–पुथल''' के बाद भी माओ के दौर के अंतिम 10 साल विकास की गति कहीं अधिक तेज थी या फिर माओ के दौर के बाद के विकास दर से कम से कम कम तो नहीं थी। तथ्य तो यही हे।

दौर/ वृद्धि दर फीसदी में	स्टील	कोयला	बिजली	माल ढुलाई	वाहन	उच्च विद्यालय में नामांकण	अनाज	कपड़ा	जीडीपी
माओ का दौर (19552–1976)	10.1	6.9	13.2	6.7	22.0	17.3	2.5	3.3	5.8
सांस्कृतिक क्रांति (19566–1976)	8.1	8.7	11.1	7.3	16.5	33.1	7.0	2.8	6.0
माओ के बाद का दौर (1977–2015)	9.6	5.3	8.8	3.7	14.3	2.5	4.1	5.9	14.9

मेरे वि लेषण में मैंने ''सकल उत्पाद'' जैसे भ्रामक मापको का इस्तेमाल नहीं किया है। मैंने बस यह देखा है कि कितने कपड़े का उत्पादन हुआ था, कितने स्टील का उत्पादन हुआ था, कितनी बिजली का उत्पादन हुआ था... इसके बारे में झूठ गढ़ना मु कल होता है चूंकि आप ऐसे में एक ही चीज की गणना दो बार नहीं कर सकते। मैंने 1949 से लेकर 1976 तक का भी आंकड़ा नहीं लिया है। आपको माओ के दौर को क्रांति के बाद के कुछ सालों को सही हालत में लाने के लिए मोहलत देना होगा। इसलिए मैंने 1921 से लेकर 1976 तक का आंकड़ा लिया है और तब मैंने इसे देंग और उसके बाद के आंकड़े से तुलना किया है। परिणाम काफी चौंकाने वाले हैं। माओ के दौर के बारे में बात करते हुए अधिकतर लोग बस इतना ही कहते है कि लोगों की बलि दे दी गयी थी। यह एक फालतू बात के अलावा कुछ नहीं है। आप केवल आम जनता को समाज का मालिक बना कर ही ऐसी तेज आर्थिक वृद्धि दर हासिल कर सकते हैं।

दूसरी तरफ भारत और ब्राजील जैसे अन्य कम विकसित देशों की तुलना में पूंजीवाद के तहत चीन की हाल की आर्थिक वृद्धि भी काफी अधिक है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। इसी वजह से लोग आज ''चीनी चमत्कार'' की बात करते हैं। लेकिन मूल बात यह है कि समाजवाद के दौर में चीन की विकास दर अधिक तेज है। इतिहास में एक बहुत ही आसान सच्चाई है : 1921 से 1941 के दौरान गृह युद्ध में सोवियतों नें प्रतिक्रियावादियों को हरा दिया था, रुस यूरोप के एक पिछड़े औद्योगिक देश से एक महाशक्ति बन गया था। महज 20 सालों में! जबकि इस देश नें विनाशकारी युद्ध झेला था। सोवियत संघ की तुलना में जो कुछ चीन में पिछले 40 सालों में हुआ है वह तो कुछ भी नहीं है। सोवियत संघ की तरह ही चीन में समाजवाद

ने माओ के दौर में उल्लेखनीय आर्थिक सफलता हासिल की थी। इसलिए यह एक झूठ है कि माओ के दौर में लोगों को बेहतर महसूस कराने के लिए आर्थिक विकास की बलि दे दी गयी थी। यह एकदम सच नहीं है।

इसके अलावा माओ के चीन में केवल उत्पादन में विकास ही माओं के बाद के दौर से अधिक नहीं था बल्कि जनता को यह वि वास भी हुआ था कि वह समाज का मालिक है। यही वह वजह है जिसकी वजह से 1989 का दमन हुआ। सरकार के खिलाफ लोगों के सड़कों पर उतरने का कारण यह था कि उनको लगता था कि सरकार उनकी है। यही सांस्कृतिक क्रांति का भाव था। हालांकि इस आंदोलन के बुनियादी कारणों की मुख्यधारा के भोधकर्ताओं द्वारा पूरी तरह अनदेखी कर दी गयी।

समाजवादी विरासत

ओनुरकैन उल्करः खासकर 1970 के दशक के मध्य से ढेर सारे विकासशील देशों नें भी बाजार आधारित सुधार प्रक्रिया को अपना लिया। लेकिन आज हम केवल ''चीनी मॉडल'' को ही एक ''सफल प्रयोग'' के रूप में बताते हैं। विगत में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पूंजी द्वारा प्रोत्साहित किए गए अन्य सारे ''मॉडल'' ध्वस्त हो चुके हैं। इसके मुख्य कारण क्या हैं? मुख्यधारा के अर्थशास्त्रियों दावा है कि माओ के दौर के बाद के चीन का विकास यह साबित करता है कि तथाकथित ''नियंत्रित अर्थव्यवस्था'' के बरअक्स बाजार अर्थव्यवस्था सर्वोच्च है। क्या आपको लगता है कि इस दावे में कोई दम है? क्या चीन में बाजार आधारित रूपांतरण की तुलनात्मक सफलता को माओ के दौर में बनाए गए पैमाने बगैर स्वतंत्र भारी उद्योगों के भी हासिल किया जा सकता था?

फ्रेड एंगस्ट : यह भी काफी मजेदार सवाल है। मुख्यधारा के अर्थशास्त्री विकास के बारे में एकदम अनभिज्ञ हैं। इसका कारण यह है कि अधिकतर तीसरी दुनिया के देशों में साम्राज्यवाद की वजह से विकास बहुत ही कठिन रहा है। साम्राज्यवादियों और बहुराष्ट्रीय निगमों नें तीसरी दुनिया के देशों में विकास की हर उन कोशिशों को बाधित किया जिससे उनके एकाधिकारी सत्ता के लिए चुनौतियां खड़ी हो सकती थीं। चीन केवल इसीलिए खड़ा हो पाया चूंकि इसने साम्राज्यवाद के दौर में भी अपनी संप्रभुता बनाए रखी। यही मुख्य कारण है। आज भी दुनिया पर नजर डालिए, किन देशों में विदेशी सेनाएं नहीं हैं? कौन से देश सैनिक, राजनीतिक और आर्थिक मामलों में संप्रभू हैं? केवल रूस और चीन, इसमें मामूली हद तक भारत को भी रखा जा सकता है। साम्राज्यवाद के युग में आर्थिक विकास के विमर्श को समझे बगैर आपकी इस बारे में कोई समझदारी नहीं बन पाएगी कि चीन क्यों विकास कर सका था।

अतः बुनियादी रूप से यह इतिहास की एक विडंबना है कि पूंजीवाद के विकास के लिए भी एक तीसरी दुनिया के देश को पहले समाजवाद की जरूरत है। माओ ने एक बार कहा था, ''केवल समाजवाद ही चीन को बचा सकता है।'' हम अब इसमें जोड़ते हैं, ''तीसरी दुनिया के देशों में केवल समाजवाद ही पूंजीवाद को बचा सकता है।'' आप साम्राज्यवाद के युग में यदि तीसरी दुनिया के देशों में पूंजीवाद का विकास चाहते हैं तब आपको सबसे पहले साम्राज्यवाद से मुक्ति हासिल करनी होगी और एक संप्रभू आर्थिक विकास के रास्ते पर आगे बढ़ना होगा। केवल तभी आप एक सुसंगत, और वि व के अर्थव्यवस्था में खड़े होने लायक एक मजबूत राष्ट्रीय आर्थिक आधार का निर्माण कर सकते हैं।

ओनुरकैन उल्करः आप कुछ ऐसी ही बात कह रहे है जिसे समीर अमीन ''अलगाव'' (delink) कहते हैं।

फ्रेड एंगस्ट : आप ठीक ही कह रहे हैं। आपको देशज आर्थिक विकास के लिए अलगाव की जरूरत पड़ती है। समाजवाद के लिए आपको यह सबसे पहले करना पड़ता है। 1949 में ही चीन के खुले होने के बाद इसकी हालत आज के फिलिपिंस से अलग नहीं होती। और इसकी हालत भारत से बेहतर नही होती। भारतीय

अर्थव्यवस्था में वृद्धि की अपेक्षा की जाती है लेकिन इसके पास इसे बनाये रखने की क्षमता नहीं है। सुधार के बाद अन्य तीसरी दुनिया के दे ाों की तुलना में चीन की तुलनात्मक आर्थिक सफलता संप्रभू बने रहने की वजह से ही है। इसके पास अपना औद्योगिक आधार है। यह निर्धारित करता है कि किन क्षेत्रों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को काम करने की छूट दी जायेगी। उर्जा, परिवहन और वित्त जैसे क्षेत्रों में चीनी सरकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आने की छूट नहीं देती। मोटर जैसे कुछ अन्य क्षेत्रों में इन कंपनियों को संयुक्त उपक्रम के जरिए ही आने की इजाजत है। कोई भी विदेशी कंपनी संयुक्त उपक्रम को पसंद नहीं करती। उनको पूरी मालिकाने वाली सहायक उपक्रम पसंद है। लेकिन चीन का कहना है कि आइये! मगर यही भार्त है। इसका पालन करें या फिर वापस जायें। यदि आप यहां आना चाहते हैं तब आपको संयुक्त उपक्रम का गठन करना पड़ेगा।

लेकिन यदि चीनी 1949 में ही संयुक्त उपक्रम का गठन करने लगते तब वे क्या कर सकते थे? उनके पास कुछ भी नहीं था! हालांकि 1974 में मैं जब चीन से जा रहा था, देश का हरेक प्रांत ट्रक बनाने में सक्षम था। उनकी गुणवत्ता ठीक नहीं थी; बिकने वाले हरेक ट्रक को ठीक करने के लिए उन्हें तकनीशियन भेजना पड़ता था। इन सबके बावजूद उनके पास ट्रक था! जब यह आपके पास है तब आप इसमें सुधार कर सकते हैं। यदि आपके पास ट्रक ही नहीं है तब आप क्या करेंगे। चूंकि हरेक प्रांत के पास अपना ट्रक निर्माण संयंत्र था तब आने वाले बहुराष्ट्रीय कंपनियों को उनके साथ संयुक्त उपक्रम बनाने को कहा गया। चीनियों का कहना था, '' हम ढांचा बना सकते हैं; हम टायर बना सकते हैं; हम सीट बना सकते हैं। लेकिन हमें आपके इंजन की जरूरत है; हमें आपके संचार की जरूरत है। आपका इंजन और संचार हमारे वाले से बेहतर है। इसके अलावा हम कुछ भी बेहतर बना सकते है।'' इस तरह से संयुक्त उपक्रम काम करता है।

ठस तरह से एक सुसंगत, देशज और चौतरफा आर्थिक आधार ही चीन के पूंजीवादी दुनिया में फिर से उभरने और एक बढ़ते औद्योगिक ताकत की कुंजी है। इसके अभाव में उदारवादी नीतियां तीसरी दुनिया के देशों को बर्बाद कर देती है। फिलिपिंस उनमें से सबसे बेहतर उदाहरण है जिन्होंने नव उदारवादी नीतियों को लागू किया। आज उसके पास दिखाने के लिए भी कुछ नही है। कुछ नही! यह बहुत ही दुखद है। यहां तक की वे एक चिमटा भी नहीं बना सकते; वे एक कांटी तक नहीं बना सकते। वे केवल प्राचीन चीजें ही बना सकते हैं। उनके बाजार में जो कुछ भी है वे तमाम चीजें बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उत्पाद है या फिर चीन से सस्ते में आयात किया हुआ।

ओनुरकैन उल्करः यदि मैं गलत हूं तब आप मुझे सही करियेगा। मुझे लगता है कि आपने कहा है कि चीन अभी भी एक तरह की संप्रभुता को बरकरार रखता है और इसके लिए माओ के दौर की विरासत धन्यवाद का पात्र है। ऐसे में आप आज के चीन में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की भूमिका को कैसे देखते हैं? चूंकि माओ क बाद वाले दौर में चीन की जीडीपी में तेज वृद्धि के लिए एफडीआई को ही प्रेरक शक्ति माना गया है।

फ्रेड एंगस्ट : मुझे लगता है कि एकदम ऐसा नहीं है। मेरे कहने का मतलब यह है कि यह वास्तविकता से कोसो दूर है। चीन में सच में एफडीआई की एक भूमिका है लेकिन मुझे लगता है कि शोधकर्ताओं नें इसे काफी बढ़ा–चढ़ा कर देखा है। वास्तव में चीन तकनीक की चोरी करता है। नकल करना चीन की सबसे बड़ी खूबी है। इसी वजह से चीन अन्य तीसरी दुनिया के देशों से ज्यादा तेज गति से विकास करता है। जब आपके पास एक संप्रभू आर्थिक आधार, सैनिक संप्रभुता और राजनीतिक संप्रभुता हो तब नकल करना नये खोज करने से ज्यादा तेज होता है। तब आप एक लंबी छलांग लगा सकते हैं; एक आसान रास्ता अपना सकते हैं। टेलीफोन के साथ शुरू करने के बजाये आप सीधे मोबाइल से शुरू कर सकते हैं। वीसीआर से शुरू करने के बजाये आप सीधे वीसीडी या डीवीडी रिकॉर्डर से शुरू कर सकते हैं। यहां तक की आज चीनी सिनेमा भी पूरी तरह हॉलीवुड की फिल्मों के नकल पर केन्द्रित है।

मुझे अपनी बात को उदाहरण के जरिए स्पष्ट करने दें: जैसे मैकडोनाल्ड यहां आया और चीनियों नें इससे सीखा। आज चीनी फास्ट–फुड उद्योग मैकडोनाल्ड के पिछवाड़े पर लात मार रही है। या फिर फेडएक्स चीन में आया और आज यह पूरी तरह चीनी एक्सप्रेस डिलिवरी कंपनियों द्वारा हाशिये पर पहुंचा दिया गया है। ऐसे अनेको उदाहरण हैं। लेकिन जो चीजें इसे संभव बनाती हैं, वह यह है कि आपको अपने देश में कूंजी उद्योगों के उपर अपना संप्रभू नियंत्रण है।

ओनुरकैन उल्कर: आप माओ के बाद वाले चीन में श्रम के माल में बदल जाने से उत्पन्न घरेलू अंतरविरोधों को कैसे देखते हैं? क्या चीन में खेत मजदूर वर्ग की काम करने और रहने–सहने की स्थिति खासकर पलायित मजदूरो की स्थिति इस आर्थिक मॉडल के बरकरार रहने के लिए खतरा पैदा कर रहा है?

फ्रेड एंगस्ट : यहां माओ के दौर की एक दूसरी अद्भूत उपलब्धि भी है कि जिसे शोध करने वाले अक्सर नजरअंदाज करते हैं। उनको एकदम मालूम नहीं है कि चीन में सस्ता श्रम का राज क्या है। उनका कहना है कि यह श्रम शक्ति के आकार के बड़ा होने की वजह से है। या फिर वे कहते हैं कि चीन में जनसंख्या की संरचना में नौजवानों की संख्या काफी अधिक है। लेकिन ऐसा तो अन्य तीसरी दुनिया के देशों में भी है। चीन अपने सस्ते श्रम का इस्तेमाल कैसे करता है जबकि अन्य देशों के पास अपने सस्ते श्रम के इस्तेमाल की भी हालत नहीं है। यह एक बडी विडंबना है। मुख्यधारा के अर्थशास्त्री और पश्चिमी सामाचार संसाधन इस तथ्य का सही तरीके से जबाब नहीं दे पाते।

यह मेरे लिए भी एक लंबे समय तक पहेली ही था जबतक मैं फिलिपिंस नहीं गया था। मैं वहां तीन बार गया, लोगों से बातें की और उस देश की सामाजिक वास्तविकता को समझने की कोशिश की। जब मैंने फिलिपिंस की चीन से तुलना की तब पाया कि चीन में बुनियादी फर्क यह है यहां भूमि सुधार किया गया है। भूमि सुधार की वजह से हरेक चीनी किसान को जमीन का एक टुकड़ा दिया गया है। यही चीन के सस्ते श्रम की कुंजी है। यदि आप चीन के आधिकारिक न्यूनतम मजदूरी की तुलना और उदाहरण के लिए आज के फिलिपिंस (मुझे भारत के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है) के आधिकारिक न्यूनतम मजदूरी की तुलना करें तो आपको ज्यादा फर्क नहीं दिखेगा। फिलिपिंस में एक बड़ी आबादी इसी न्यूनतम मजदूरी पर गुजर–बसर करती है और गरीबी में जीती है। लेकिन चीनी मजदूर भी कमोबे ा इसी मजदूरी पर जीती है और कहीं अधिक बेहतर हालत में है। इसके क्या कारण हैं? इसके मुख्य कारण यह है कि फिलिपिंस जैसे दे ा में भूमिहीन किसान गांव से पलायन को बाध्य होते हें, वे भाहर में आते हैं, न्यूनतम मजदूरी पर गुजर–बसर करते हैं और वह मजदूरी उनके पूरे परिवार के लिए पर्याप्त नहीं होती। नौजवानों का देखभाल, उम्र दराज लोगों का देखभाल सबकुछ उनकी मजदूरी पर ही निर्भर है। लेकिन चीन में पलायित मजदूर और किसान, जो जीवन के साधन के लिए गांव छोड़कर भाहर आते हैं, का परिवार पूरी तरह इनकी ही मजदूरी पर आश्रित नहीं होता। उनके पास घर में भी कुछ जमीन होती है। गांव में बच्चों को पालने और बूढ़ों की देखभाल का खर्चा नगण्य होता है। ऐसे में यह बात निकलती है कि यदि मजदूर वर्ग के पुनरूत्पादन की प्रक्रिया यदि गांव में संपन्न होती है तब इसका लागत काफी कम होता है। लेकिन आप एक भूमिहीन किसान के रूप में केवल भाहरों की तरफ बढ़ते हैं तब युवकों की शिक्षा, रहने का खर्च और बूढ़ों के देखभाल के खर्च में काफी अधिक इजाफा हो जोता है। चीन के देहाती इलाकों में लोग 60, 70 और यहां तक की 80 की उम्र में भी खेतों में और बगानों में काम करते हैं। वे लोग आतमनिर्भर हैं। उनके पास उनका अपना घर है, उनकी अपनी जमीन है। यदि वे काम करने में सक्षम नहीं भी रहते हैं तब भी उनके पास मोबाइल फोन रहता है। वे किसी दूसरे को अपनी जमीन पर रोपने, जोतने या काटने के लिए बुला लेते हैं। वे किसी भी तरह से इसे संभाल लेते हैं। इस तरह उम्रदराज लोग युवकों के लिए बोझ नहीं होते। चीन में सस्ते श्रम का यही राज है। बिना इस आधार के चीन में इस तरह के सस्ते श्रम का होना संभव नहीं था। पूंजीवादी शोधार्थी कभी इसका जिक्र नहीं करते हैं।

आज चीन में भाहरीकरण के कारण श्रम लागत में वृद्धि हो रही है। स्थानीय सरकारें और रियल इस्टेट मुनाफाखोर किसानों को उनकी जमीनों से बलपूर्वक बेदखल कर रहे हैं ताकि वे औद्योगिक इलाका बना सकें। और यदि आप एक बार किसानों को शहरी गठन के लिए उनकी जमीन से जबरन बेदखल करते हैं तब उनकी मजदूरी पहले से बढ़ जाती है ताकि उनके लिए कम से कम जीना संभव हो सके। इसलिए आज चीन में सरकार द्वारा भाहरीकरण के अभियान से सस्ते श्रम का सफाया हो रहा है। यह भी पूंजीवाद की विडंबना ही है। इसीलिए मुझे लगता है कि पूंजीवाद को केवल मार्क्सवादी ही समझ सकता है। पूंजीवादी विद्वान, पूंजीवादी अर्थशास्त्री तो इसे कतई नहीं समझ सकते।

समाजवादी चीन में सामाजिक सेवाएं

ओनुरकैन उल्करः अब हम फिर से अपने पिछले मुद्दे पर चलते हैं। माओवादी चीन में लगभग तमाम मुलभूत सामाजिक सेवाएं मुफ्त प्रदान की जाती थी या फिर महज एक सांकेतिक शुल्क लिया जाता था। गांवों में जन कम्युन व्यवस्था में भाहरों में आयरन बाउल सिस्टम नामक व्यवस्था को हमें धन्यवाद करना चाहिए। हालांकि आज इस नीति की सुधारों के प्रवक्ता और मुख्यधारा के विद्वानों द्वारा आलोचना की जाती है जिनका कहना है कि इन सेवाओं की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी और उस समय काफी निम्न स्तर की थी। माओवादी चीन में सामाजिक सेवाओं की गुणवता कैसी थी? क्या इससे चीन जनता का रहन–सहन बेहतर हुआ था?

फ्रेड एंगस्ट : इसमें मैं छोटी सी सुधार कर रहा हूं कि तमाम चीजें मुफ्त नहीं थी। शहरी निवासी होने पर आपको जितना कुछ मिल रहा था वे सुविधाएं किसानों को नहीं दिया जाता था। उनमें से कुछ तो मुफ्त थीं लेकिन कुछ के लिए आपको एक छोटी राशि चुकानी होती थी। उदाहरण के लिए आवास एकदम मुफ्त नहीं था। आपको एक सांकेतिक किराया चूकाना पड़ता था। शिक्षा कमोबेश मुफ्त थी। आपको केवल अपनी किताबों का मूल्य चुकाना पड़ता था वह भी बेहद कम था। यह भी एक कारण था जिसकी वजह से माओ के दौर के बारे में की गयी जीडीपी की गणना कम थी। यदि कोई सुविधा मुफ्त हो तब इसकी गणना जीडीपी में नहीं की जाती। चूंकि यहां कोई माल विनिमय नहीं हो रहा है।

यह हो सकता है कि उन सेवाओं की गुणवत्ता आज जितनी अच्छी नहीं हो। लेकिन आप यदि इस तरह से देखें की उस समय क्या संभव था तब आपको अहसास होगा कि उनकी उपलब्धियां अद्भूत थीं। उदाहरण के लिए देहातों में उन्होने ''नंगे पांव वाले डॉक्टर'' की व्यवस्था बनायी। पूरी दुनिया में इसे एक सफल सामाजिक सेवा के रूप में स्वीकार किया गया।

ओनुरैन ओकर : यहां तक की वि व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र संघ नें इसे बाकी के तीसरी दुनिया के देशों के लिए सिफारिश किया...

फ्रेड एंगस्ट : हा! यह अद्भूत है। इसमें कोई भाक नहीं है कि नंगे पांव डॉक्टर द्वारा प्रदान की गयी सेवाओं की गुणवत्ता उतनी बेहतर नही थी जितनी अस्पतालों में मिलती है। लेकिन उस समय अस्पताल व्यापक जनता की पहुंच से बाहर थे। इस तथ्य को ध्यान में रखने पर नंगे पांव डॉक्टर की आलोचना करना एकदम ही हास्यास्पद है! आपको इसपर नजर रखना है कि क्या उपलब्ध है। हमें उन लोगों से पूछना चाहिए जो नंगे पांव डॉक्टर की गुणवत्ता पर सवाल उठाते हैं कि उस व्यवस्था का क्या विकल्प था? चीन औद्योगिकरण की प्रक्रिया वाला एक गरीब मुल्क था। हम कभी नहीं कहते की माओ के दौर में हम काफी अमीर थे। हम बस यह कहते है कि हम इस बात के लिए कमर कस रहे थे कि हमें भूखा न रहना पड़े। कुल मिलाकर यह एक गरीब मुल्क ही था। इसलिए माओ के उपर लगाया गया यह आरोप बिल्कुल ही निराधार है।

माओ के दौर की नीतियों ने सच में बदलाव किया था। चीन में जीवन प्रत्याशा में उल्लेखनीय इजाफा हुआ था। यह वृद्धि केवल तीसरी दुनिया के देशों में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में सबसे अधिक थी। मैं यह देखकर

आ चर्यचकित रह गया कि माओ के दौर के सबसे बुरे समय, ''तीन मुश्किल सालों''[2] में भी सबसे अधिक मृत्यु दर 2.5 फीसदी था। यह दर तो भारत में ''आम'' है!

माओ के दौर की आलोचना करने के लिए आपको ढेर सारे झूठ बोलने होते हैं। यह अद्भूत है। प्राकुतिक विज्ञान में, भौतिकी में, रसायन विज्ञान में, हमारे पास जांच के लिए प्रयोग ाालाएं हैं। इसमें आप एकदम सही–गलत का फैसला कर सकते हैं। लेकिन सामाजिक विज्ञान में एकदम सही–गलत का फैसला देना इतना आसान नहीं होता। आप एकदम नि पक्ष नहीं हो सकते। आप चीजों को जिस तरह से देखते हैं उसको आपका हित प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए मैं यह देखकर सन्न रह गया कि किस तरह ''एि ायन टाइगर्स'' के लिए मिल्टन फ्रिडमैन नें एक जुनून पैदा किया ताकि वह दिखा सके कि पूंजीवाद समाजवाद से उत्कृष्ट है। हालांकि उसने सोवियत संघ के अनुभव की पूरी तरह अनदेखी की। उसने बस उन उदाहरणों को चुना जो उसकी बातों के पक्ष में खड़े हो रहे थे।

''मुश्किलों के तीन साल''' और पार्टी के भीतर संघर्ष

ओनुरैन उल्कर : यहां एक और सवाल बनता है। आपने कहा है कि पश्चिमी मुख्यधारा के अकादमिक परोक्ष रूप से यह आरोप लगाते रहे है कि वे एक खूनी ताना ााह थे जिन्होंने अपने काल्पनिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए लाखों चीनी जनता की बलि चढ़ा दी। इस दावे को सही साबित करने के लिए वे आम तौर पर ''ग्रेट फेमिन'' का उदाहरण देते हैं जो महान छलांग के बाद हुआ था। आप इस दावे के बारे में क्या सोचते हैं? क्या सच में माओ ''यूटोपियन'' थे?

फ्रेड एंगस्ट : मुझे नहीं मालुम कि उनके ''यूटोपिया'' का क्या मतलब है। जब आप किसी पर वि वास नहीं करते हैं तब आप उसे ''यूटोपियन'' या ''सनकी'' करार दे देते हैं। इसके लिए कोई भी निरपेक्ष पैमाना नहीं है। आप ''यूटोपिया'' को कैसे परिभाषित करते हैं? उनके लिए तो मार्क्सवाद ही ''यूटोपिया'' है। इसलिए यह तो बस उनका लेबल है।

''माओ नें लोगों को मरवा दिया।'' यह दावा सच्चाई से कोसों दूर है। पार्टी के अंदर संघर्षों के अनेकों उदाहरण हैं। सबकी इच्छाओं और इरादों के विपरीत माओ उस दौर में किसी को भी मृत्युदंड नहीं देना चाहते थे। माओ उन गिने–चुने लोगों में थे जिनका मानना था कि ''आप लोगों को जेल में बंद कीजिए लेकिन उनको मृत्युदंड मत दीजिए। क्योंकि आप इसमें एक गलती करते हैं तो फिर इसको वापस नहीं लाया जा सकता।'' लेकिन मुख्यधारा के विद्वान ऐसी बात करते हैं मानो क्रांति के दौरान जितनी भी मौतें हुई इसके लिए माओ ही जिम्मेदार थे। समाजवादी दौर में जिन लोगों की मौतें हुई उन्हे माओ नें मार दिया। वे इसी तरह से करते हैं जो काफी हास्यास्पद है। वास्तव में, पार्टी में किसी को भी जान से मारने का या गोपनीय हत्या का माओ का सीघा निर्देश आपको नहीं मिलेगा।

आप यदि माओ की नीतियों से हुई मौतों की तरफ इशारा करना चाहते हैं तब हमें ''तीन मुश्किल सालों'' के बारे में बात करनी चाहिए। उस समय लोग भुखमरी की वजह से मरे। लेकिन आप यदि इसकी जड़ में जायें तब आपको पता चलेगा कि इसी वजह से माओ नें कुछ लोगों पर ''पूंजीवादी राही'' होने का लेबल लगाया था। माओ ने लोगों को पहले ही आगाह किया था कि विपदा होने वाली है। यह चीन में समाजवाद और पूंजीवाद की बीच के तीखे संघर्ष का हिस्सा था। पूंजीवादियों को ट्रंप की तरह ही अपने हितों के पूरा होने तक इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि कितने लोग मरे। जिस तरह ट्रंप नें अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए सीरिया पर बेपरवाही से बम बरसाने के आदेश दिए। वे ''लोकतंत्र'' और ''आजादी'' के नाम पर कत्ल और सब कुछ करते हैं। आपकी पार्टी में इस तरह के लोग और नेता थे। अपने रूतबे और अपने पद की

[2] 1951 से 1961 के बीच चीन में एक भारी अकाल पड़ा जिसे ''तीन मुश्किल साल'' कहा जाता है।

रक्षा करने में उनको इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि कितने लोग मरे। ''तीन मुश्किल साल'' उन लोगों की वजह से ही आया जो पूंजीवाद का रास्ता अपनाना चाहते थे।

सबसे पहले 1950 के दशक में वे सामूहिकीकरण के खिलाफ थे। सामूहिकीकरण की सफलता के बाद अब इसे वे आगे बढ़ाना चाहते थे। ''कम्युनिस्ट हवा'' या ''अतिरंजना हवा'' के पीछे यही वजह थी। उन्होंने इसे आगे क्यों बढ़ाया? मेरे पास ढेर सारे उदाहरण तो नहीं हैं लेकिन कुछ जरूर हैं। मेरा मानना यह है कि इसकी वजह यह है कि आप बड़े सामूहिक में किसानों से आसानी से अनाज वसूल सकते हैं। हम अभी भी औद्योगिकरण की प्रक्रिया के बारे में बातें कर रहे हैं। आप यदि किसानों से अनाज वसूलना चाहते है तब यह परिवार आधारित खेती में काफी कठिन है। लेकिन जब आप एक बार सामूहिकीकरण करते हैं तब अनाज की वसूली काफी आसान हो जाती है। इसीलिए उन्होंने ''कम्युनिस्ट हवा'' को आगे बढ़ाया। चूंकि उनको मालूम हो गया था कि किसानों के अतिरेक को हड़पने का यह सबसे आसान तरीका है। किसानों भले ही भूखों मरें इसकी उन्हें कोई परवाह नहीं थी । यहीं से पुरानी नीति में उतार–चढ़ाव की शुरूआत होती है।

ओनुरकैन उल्करः आज इसकी आधिकारिक इतिहास लेखन में कोई चर्चा नहीं होती लेकिन वास्तव में ल्यू शाओ ची, देंग, पेंग जेन, भाओ जु,, इन सबने इस ''कम्युनिस्ट हवा'' को आगे बढ़ाया था और तहे दिल से इसका समर्थन भी किया था। क्या मैं सही हूं?

फ्रेड एंगस्ट : आप एकदम सही हैं! उनलोगों ने ही इसको आगे बढ़ाया था और माओ नें इसके लिए उनकी आलोचना की थी। लेकिन उस समय माओ अल्पमत में थे। इन लोगों ने सामूहिकीकरण के बाद किसानों से अनाज हड़पने में काफी सहूलियतें महसूस की थी इससे माओ काफी परेशान हुए थे।

आपको ''कम्युनिस्ट हवा'' को औद्योगिकरण की पृष्ठभूमि में समझना चाहिए। इसके साथ ही एक दूसरा इत्तेफाक हुआ कि चीन में सोवियत संघ की मदद से 156 औद्योगिक प्रोजेक्ट का निर्माण। जब इन 156 औद्योगिक प्रोजेक्ट को बनाया जाने लगा तब इसमें बड़े पैमाने पर मजदूरों की जरूरत पड़ी। इसका मतलब था कि इतने मजदूरों को खिलाने के लिए और ज्यादा अनाज चाहिए। ऐसे में जो प्रांत और इलाके किसानों से ज्यादा अनाज जमा करते उनको पार्टी में ज्यादा प्रतिष्ठा और चीन में औद्योगिकरण के उनके मदद के लिए नेतृत्व मिलता। चूंकि ये सारे प्रोजेक्ट चल रहे थे ऐसे में इनको चलाते रहने के लिए बड़े पैमाने पर अनाज की जरूरत थी। इसलिए यदि आपका प्रांत केंद्र के लिए ज्यादा अनाज हासिल करता है। तब आप एक महान आदमी बन जाते! इस अभियान का यही बेहतर विवरण है।

उदाहरण के लिए हेनान और अनहुयी में लोगों नें इस बात की डींगें हांकी कि उन्होंने कितना अनाज जमा किया है। 1958 में, सबने ढेर सारे अनाज जमा किए। लेकिन 1959 में हेनान और अनहुयी दोनों जगहों पर प्राकृतिक अकाल हुए। इसलिए अनाज उत्पादन एकदम नीचे चला गया। लेकिन स्थानीय नेता इसे स्वीकार करने के बजाए बस इसमें लीपापोती करना चाहते थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसान अपने अनाज का आधा देने से इनकार करने लगे। आप अंदाजा लगाइयें कि किसने 1959 में केन्द्रीय कमेटि को किसानों के अनाज छुपाने से संबंधित वह कुख्यात चिट्ठी लिखी? वह शाओ जियांग था। यदि कोई किसान अनाज छुपाता है तब आप क्या करते हैं? इसके बारे में दो दृष्टिकोण हैं। पूंजीवादी राहियों का दृष्टिकोण कहता है कि ''कुछ भी हो हमें अनाज जमा करना है।'' माओ का दृष्टिकोण कहता है कि ''किसान अपना अनाज क्यों छुपा रहे हैं? इसका मतलब है कि हम किसानों से दुश्मनी कर रहे हैं। हिसाब–किताब के स्तर पर ऐसा बड़ा कम्यून नहीं चला सकते।'' इसकी वजह से ही माओ नें कहा था, ''रुको! हमें छोटे स्तर पर हिसाब–किताब करना चाहिए।'' इसीलिए उन्होंने त्रिस्तरीय मालिकाने व्यवस्था की वकालत की। बुनियादी इकाई उत्पादन इकाई थी। इसके उपर ब्रिगेड स्तर था और फिर कम्यून स्तर... किसानों के उत्पादन का विभाजन उत्पादन इकाई के स्तर पर किया जाता था। हरेक उत्पादन इकाई में एक दर्जन या फिर कुछ अधिक परिवार होते थे। जब आप कड़ी मेहनत करेंगे तब आप अपने पड़ोसी सामूहिक कार्य से भी अनाज

हासिल कर सकते हैं। यह एकदम सीधा था। लेकिन लियू शाओ ची, देंग शियाओ पिंग, शाओ जियांग,,, इन तमाम लोगों नें कम्यून स्तर को पसंद किया। उनको बस इससे मतलब था कि कम्यून में जाइए और पूरे अनाज पर कब्जा जमा लिजिए। माओ नें वास्तव में उनहें चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था, ''यदि आप ऐसा करेंगे तो जनता भूखों मरने लगेगी!'' हमारे पास उसके ज्ञापन थे।

भााओ जियांग की रिपोर्ट के बाद कई अधिकारी गांवों में गए। वे किसानों पर चिल्लाये, धौंस दिया, उनको धमकी दी और उनसे धान छिपाने की जगह पूछकर उनकी पिटाई तक की। उन्होंने बलपूर्वक किसानों से खाने और बीज के लिए रखे गए सारे अनाज जप्त कर लिए। ''अकाल'' का यही कारण था। जैसे ही अकाल फैलने लगा, लोग प्रभावित इलाकों से भागने लगे। जो कुछ हो रहा था इसकी लीपापोती करने के लिए जिम्मेवार स्थानीय अधिकारियों नें किसानों का पीछा कर उन्हें गांव में वापस लाया। और यदि कोई केन्द्रीय कमेटी को चिट्ठी लिखता तो वे चुपचाप इसे रख लेते। उदाहरण के लिए एक गांव में पार्टी के केवल चार सदस्य बच गए थे। उन्होंने अपने खून से चिट्ठी लिखी। वे बस इसे हेनान प्रांत से बाहर भेजना चाहते थे। जब केन्द्र यह पता करने आया कि क्या हुआ है तब तक स्थिति काफी भयावह हो चुकी थी। स्थिति उससे अधिक बुरी हो गयी थी जितना वे सोंच रहे थे। उन्होंने स्थिति को ठीक करने के लिए फौरन अनाज भेजने की कोशिश की। हेनान प्रांत में नेताओं नें ब्रिगेड के तमाम नेताओं, हजारों लोगों की घेराबंदी कर दी और उनपर ''अपराधी'' होने का आरोप लगाया। उसने स्थानीय जनता पर आरोप लगाया...यह फासीवाद है। ये लोग खुद को ''कम्युनिस्ट'' कह रहे थे लेकिन सच्चाई में वे ''कम्युनिस्ट'' के खोल में भाुद्ध रूप से फासीवादी थे। वे पार्टी में बस अपना पद और रूतबा बचाना चाहते थे। उनको इसकी कोई परवाह नहीं थी कि कितने लोग मरे। यह वही था जो साम्राज्यवाद नें हमेशा किया था। अपने फायदे के लिए वे अंत तक लड़ सकते थे।

इसके बाद, माओ को अहसास हुआ कि ये लोग काफी नीचे तक हैं। आप कल्पना कीजिए की ''तीन मुश्किल सालों''के बाद उन्होंने इन कठिनाइयों से निबटने के लिए क्या समाधान प्रस्तावित किया? फिर से सामूहिकरण को तोड़ना! 1950 के भाुरूआती दौर में वे सामूहिकीकरण के खिलाफ लड़े थे। तब उन्होंने ''कम्युनिस्ट हवा'' को आगे बढ़ाया। अकाल की विपदा के बाद उन्होंने फिर से निजीकरण और सामूहिकीकरण को तोड़ना प्रस्तावित किया। यही वे ''पूंजीवादी राही'' हैं। इससे माओ की यह समझदारी बनी कि पार्टी में पूंजीवादी राही मौजूद हैं। उन्होंने लोगों की मौत के लिए खासकर सिचुआन में हुई मौतों के लिए माओ पर आरोप लगाया। लेकिन सिचुआन का अकाल अनाज के अभाव से नहीं हुआ था बल्कि सिचुआन में बहुत अच्छी उपज हुई थी। देंग ि ायाओ पिंग सिचुआन से ही है। चीन में कुछ लोगों का कहना है कि देंग शियाओ पिंग नें ही उस समय के सिचुआन पार्टी कमेटी के मुखिया ली जिंग्वान को अनाज बाहर भेजने को कहा था। ली जिंग्वान ने उन्हें चेताया था कि यदि आप यहां से इतना अनाज बाहर भेजेंगे तब यहां के किसानों को भुखमरी की नौबत आ जायेगी।'' तब देंग शियाओ पिंग नें दो टूक जबाब दिया था कि हमें सिचुआन में लोगों का मरना पसंद है लेकिन बिजिंग शहर में नहीं।'' इन लोगों ने जो नीतियां बनायी उसकी वजह से 1960–61 में भारी कठिनाइयां पैदा हुईं। अपनी चमड़ी बचाने के लिए उसने सिचुआन की जनता को मरने के लिए छोड़ दिया। 1989 में यह देखकर की देंग क्या कर सकता है मुझे अब यह वि वास हो गया है। अकाल की यही सच्चाई है। उन जगहों में हीं सबसे अधिक लोग मरे जहां उत्पादन के बारे में 1958 में सबसे अधिक डींगें हांकी गयी थी। ये वैसी जगह थी जो प्राकृतिक आपदा से बाकी जगहों की तुलना में कम प्रभावित थी। सच तो यह है कि कुछ दूसरे प्रांत और दूसरे जगह प्राकृतिक आपदा से सबसे ज्यादा प्रभावित थे लेकिन वहीं भुखमरी की हालत नहीं आयी।

मैं शांशी प्रांत में पला बढ़ा। इस प्रांत में भी कुछ जगह आपदा से बुरी तरह प्रभावित हुए। लेकिन हमारे यहां अकाल नहीं हुआ। कुपोषण की स्थिति जरूर हुई। खाने के लिए पर्याप्त नहीं था। मैंने इसका सामना किया था। मुझे याद है कि किस तरह कुछ लोग हेनान से खेती की तलाश में शियान आ रहे थे, जहां मैं पला बढ़ा। सालों बाद ही हमने वह कहानी सुनी। बिजिंग गए शानशी के सारे प्रांतीय नेताओं ने अन्य प्रांतों से

केन्द्र को भेजे जाने वाले अनाजों के बारे में बहुत बढ़ा–चढ़ा कर बताये गए आंकड़ों के बारे में सुना था। उन्होंने उत्पादन के बारे में लंबी–चौड़ी बातें की थीं। उन्होंने 10 से लेकर 20 फीसदी तक जरूरत से ज्यादा अनाज और उत्पादन के दोगुना होने तक के बारे में बातें कीं। लेकिन वास्तव में शानशी में अनाज उत्पादन में केवल 2 से 5 फीसदी तक की बढ़ोतरी थी। परिस्थिति बहुत ही भयावह मालूम पड़ती थी। हम क्या कर सकते थे? बिजिंग से लौटकर आए नेताओं नें जनता को बुलाया और कहा कि हम काफी पीछे हैं जबकि बाकी लोग हमसे उत्पादन में काफी आगे हैं। हमें भी आगे जाना चाहिए।'' भारी दबाव में भी उन्होंने केवल 10 फीसदी बढ़त के बारे में रिपोर्ट की। इसी वजह से शानशी में अकाल नहीं हुआ।

जनता नें पूंजीवादी पुनर्स्थापना के खिलाफ विद्रोह क्यों नहीं किया?

ओनुरकैन उल्करः आपने माओ के दौर में पूंजीवादी राहियों और क्रांतिकारियों के बीच संघर्ष की चर्चा की है। पार्टी में दक्षिणपंथी दिशा को हराने का माओ का तरीका नौकरशाही एलिट के खिलाफ व्यापक जनता को गोलबंद करना था और उनको हरेक स्तर पर नीतियों के निर्माण और इसे लागू करने में भाामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना था। हालांकि कम से कम मेरी जानकारी में तो मेहनतकश जनता माओ के दौर की नीतियो को बचाने के लिए प्रतिरोध में उस तरह से व्यापक गोलबंद नहीं हुई खासकर सुधार और अर्थव्यवस्था के खोले जाने के भाुरूआती दौर में। तथाकथित ''गैंग ऑफ फोर'' या अन्य वामपंथियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के खिलाफ भी कोई लोकप्रिय विद्रोह नही हुआ। जबकि इस दौर में हजारों लोगों को गिरफ्तार किया गया और उनका सफाया किया गया। आप इस अंतर्विरोध को कैसे देखते हैं?

फ्रेड एंगस्ट : यह सच है कि जब देंग सत्ता में आया तब उसने नहीं कहा कि हम समाजवाद के खिलाफ हैं। इसलिए इससे जनता में संभवतः भ्रम की स्थिति पैदा हुई। लेकिन मुझे लगता है कि आप ऐसा नहीं कह सकते कि भारी प्रतिरोध नहीं हुआ था। तब आप 1989 की घटनाओं को कैसे देखेंगे? ये सारे प्रदर्शन नये भाासक वर्गों के उभार के खिलाफ ही था। यहां तक कि इसके अगुवा नेताओं में छात्र भाामिल थे जो ''पि चमी लोकतंत्र'' की वकालत कर रहे थे। छात्रों का समर्थन करने वालों में मजदूर और किसान भाामिल थे और उनके भाामिल होने का यही कारण नहीं था कि वे अपने आप में लोग लोकतंत्र के अमूर्त धारणा के साथ थे। मुझे मालूम है क्योंकि मैं 1988 में बिजिंग में था। एक बार जब मैं खेत में जाने के लिए बस का इंतजार कर रहा था, तब मैंने खुद से सुना कि लोग उन तमाम चीजों की आलोचना कर रहे थे जो उस दौरान चीन में घटित हो रहा था। उनका कहना था, '' ये कमबख्त छात्र, यदि हमारे बारे में भी कोई बात करते तब हम भी इसमें शामिल होते।'' इसलिए वे अमूर्त ''लोकतंत्र'' के लिए ही आंदोलन नहीं कर रहे थे। वे भ्रष्टाचार और महंगाई के खिलाफ खड़े हुए थे। उनको लग रहा था कि जिस चीन को उन्होंने गढ़ा है उसका लाभ चंद अमीर लोग उठा रहे हैं। विद्वान आम तौर पर इस प्रक्रिया को केवल उपर–उपर ही देखते हैं। लेकिन आपको इसके पीछे के बुनियादी कारणों के तह में जाना पड़ेगा। आपको यह पूछना पड़ेगा कि ''लोग परेशान क्यों थे?''

दूसरा सवाल यह है कि लोग ''गैंग ऑफ फोर'' के पक्ष में खड़े क्यों नहीं हुए? मुझे लगता है कि यदि उन्होंने ऐसा नहीं भी किया तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे समाजवाद के पक्ष में खड़े नहीं हुए। ''गैंग ऑफ फोर'' के लोगों को जब गिरफ्तार किया गया तब शुरू में उनपर क्या अभियोग था? उन पर आरोप लगाया गया कि वे सांस्कृतिक क्रांति के खिलाफ थे। वे अंदर–अंदर माओ के खिलाफ साजिश कर रहे थे। इसलिए बिना यह जाने कि उपरी स्तर पर क्या हो रहा है, इस पूरी तस्वीर को समझना असंभव है। यहां तक की मेरे लिए यह समझना मुश्किल था कि क्या हो रहा है। हालांकि मैं सच्चाई को सबसे अंत में समझने वालों में से रहा हूं। इसलिए 1976 में क्या हुआ था यह समझने में मुझे 20 साल लगे। मुझे इससे पहले यह अहसास नहीं हुआ था कि तख्तापलट हो चुका है।

ओनुरकैन उल्करः इसलिए क्या हम यह मान सकते हैं कि उस समय समाजवाद के राहियों का पार्टी में आम जनता से जमीनी और नजदीकी संबंध नहीं था।

फ्रेड एंगस्ट : मैं ऐसा नहीं कहूंगा। मुझे लगता है कि लेबल लगाना चीजों को समझने का अधिभौतिक तरीका है। एक आलेख में मैंने लिखा था कि आखिरकार किन वजहों से सांस्कृतिक क्रांति विफल हुई। मेरा उसमें सुझाव था कि इसका मुख्य कारण मजदूर वर्ग का अपरिपक्व होना था। इस लिहाज से वे अपने बीच के अंतर्विरोधों से पार पाने में सफल नहीं सके। वे गुटीय लड़ाइयों से पार नहीं पा सके थे।

सांस्कृतिक क्रांति के भारू में समस्या यह थी कि जनता को किस तरह से उठ खड़े होने के लिए तैयार किया जाए। जब जनता उठ खड़ी हुई तब गुटबंदी से पार पाना सबसे प्रधान मसला हो गया था। मजदूर वर्ग की अपरिपक्वता सबसे सजीव रूप में उन दकियानुसी लोगों के द्वारा दिखाया जा रहा था जो नेताओं की आलोचना करने वाले विद्रोहियों को कुचलने में हथियार के इस्तेमाल से भी बाज नहीं आते थे। यदि आप नेताओं की आलोचना करने वाले के खिलाफ हथियार का इस्तेमाल करते हैं तब आलोचना करने का आप अपना अधिकार भी खत्म कर लेते हैं। इसे ही मैं ''मजदूर वर्ग की अपरिपक्वता'' कहता हूं। मजदूर वर्ग विभाजित हो गया था। पूंजीवादी राही एकताबद्ध थे। क्रांतिकारी नेताओं द्वारा उठाये जाने वाले उपाय कम से कम होते जा रहे थे। इसलिए उन्हें एक कोने में धकेल दिया गया था।

ओनुरकैन उल्करः जहां तक हमारी जानकारी है कि 1976 में तख्तापलट के बाद सांस्कृतिक क्रांति के कई नेताओं–कार्यकर्ताओं और मजदूर वर्ग के नेताओं को हवालात में डाल दिया गया था और सजा दी गयी थी। लेकिन इसके कोई दस्तावेज नहीं हैं कि अपने साथियों की गिरफ्तारी से मजदूरों में कोई हलचल हुई। इसके क्या कारण हैं?

फ्रेड एंगस्ट : इसका कारण मैंने बताया कि पूंजीवादी राहियों नें शुरू में ही अपना चरित्र स्पष्ट नहीं किया। ये लोग दुनिया के सबसे चतुर राजनीतिज्ञों में से थे। वे जनता को अपना असली चरित्र नहीं दिखाना चाहते थे। भारूआत में जनता को यह नहीं अहसास हुआ कि वे पूंजीवाद की पुनर्स्थापना कर रहे हैं। यह मार्क्सवाद और सं ाोधनवाद के बीच बुनियादी फर्क है। कोई भी संशोधनवादी खुलेतौर पर नहीं कहता कि ''मैं मार्क्सवाद के खिलाफ हूं!'' वे हमेशा इसके लिए छल–कपट का सहारा लेते हैं। वे अक्सर कहते है, ''अब एक नयी परिस्थिति आ गयी है इसलिए हमें एक नये दृष्टिकोण की जरूरत है।'' और अधिकतर लोगों को यह जायज लगता है!

जब उन्होंने चीन में सुधार की शुरूआत की तब उन्होंने सबसे पहले छोटे स्तर पर भाहरों में इसकी शुरूआत की। मजदूर वर्ग नें इसका व्यापक प्रतिरोध किया। अतः शहरों में वे सुधार लागू नहीं कर पाये । तब उन्होंने देहात की तरफ अपना रूख किया। देहात एक कमजोर कड़ी था। सबसे पहले उन्होंने कहा : ''ठीक है! जो ग्रामीण पहाड़ों में बिखरे हुए हैं वे काफी गरीबी में जी रहे हैं। उन्हें हम सामूहिक में शामिल होने के लिए क्यों बाध्य करें ? हमें उन जगहों में सामूहिक को भंग कर देना चाहिए!'' यह काफी सहज दिख रहा था। इस तरह से उन्होंने बारी–बारी से जमीन के सामूहिक को भंग करना शुरू किया और कुछ ही सालों के भीतर उन्होंने तमाम सामूहिकों को भंग कर दिया। इस तरह जब तक आपको अहसास हुआ सत्ता आपके हाथ से निकल चुकी थी। उनका सेना पर नियंत्रण था, सरकार पर नियंत्रण था, प्रचार मशीनरी पर नियंत्रण था–उनका हर उन चीजों पर नियंत्रण था जिसकी उन्हें जरूरत थी।

लेकिन सांस्कृतिक क्रांति के बाद मजदूर वर्ग आपस में ही विभाजित था। गुटबंदी घर कर गयी थी। उनका उद्देश्य स्पष्ट नहीं था। उनको वास्तव में इसकी समझ नहीं थी कि ''पूंजीवादी राह'' क्या है और ''समाजवादी राह'' क्या है। वे मीठी बातों से झांसे में आ गए। पूंजीवादी राहियों का कहना था, ''देखो माओ के दौर में आपके मजदूरी में कोई इजाफा नहीं हुआ। हम आपको अधिक मजदूरी देने जा रहे हैं!'' और देंग नें केवल

अधिक से अधिक नोट छापना भाुरू किया। हर कोई खुश था कि उन्हें पैसा मिल रहा है। अंत में महंगाई हासिल हुआ लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। पूंजीवादी राहियों नें अस्थायी रूप से किसानों को खरीदा, मजदूरों को खरीदा, बुद्धिजीवियों को खरीदा जब तक की उन्होंने अपनी सत्ता नहीं मजबूत कर ली। अब उनकों मालूम था कि पार्टी सदस्यों में कौन लोग वास्तव में माओवादी थे। इसलिए उनको बाहर कर दिया गया। उनको अलगाव में डाला गया, हाि ाये पर डाल दिया गया। वे बड़े ही चतुर थे। वे काफी सुलझे हुए रणनीतिकार थे। चीनी में एक मुहावरा हैः ''मेढ़क को धीरे–धीरे ताप बढ़ाकर पकाइये।'' जब तक यह अहसास हुआ कि पानी बहुत ज्यादा गर्म हो गया है तबतक समय हाथ से निकल गया था। अब बहुत देर हो चुकी थी।

ओनुरकैन उल्करः सांस्कृतिक क्रांति के अंततः विफल होने के कारणों पर थोड़ा और प्रकाश डालिए। क्या आप इससे सहमत हैं कि ''सामाजिक वर्ग'' की माओवादी वैचारिकी कुछ हद तक कमजोर हो गयी थी और इस अनिि चतता नें क्रांतिकारियों की दोस्त और दुश्मन की ठीक से पहचान पाने में अक्षम बनाया?

फ्रेड एंगस्ट : हां! लेकिन ऐसा क्यों हुआ? यदि लोग वर्ग को विश्लेषित करने के लिए शास्त्रीय फ्रेमवर्क का इस्तेमाल करते हैं तब वे समाजवाद के अंदर के वर्ग संघर्ष को नहीं समझ सकते। क्योंकि कानूनी रूप से और व्यवहार में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व नहीं है। नेता अपनी संपति अपने बच्चों को हस्तांतरित नहीं कर सकते। यदि वे अपनी संपत्ति हस्तांतरित भी करना चाहेंगे तो यह असुरक्षित है और कानूनी नहीं है। आज भी, चीनी राज्य–पूंजीवादी गठजोड़ (मुझे लगता है कि गयू जिंचान guóyǒu zīchǎn इसके लिए सबसे बेहतर चीनी शब्द है) व्यक्तियों के मालिकाने में नहीं है। इसकी वजह से वे इसे ''गोन्गयू'' (निजी स्वामित्व वाले) कहते हैं।

''वर्ग'' कहने से हमारा क्या मतलब है? मुझे लगता है कि कौन निर्णय निर्धारण की ताकत किसके पास है और किस तरह इस सत्ता का इस्तेमाल होता है, यह देखना ज्यादा महत्वपूर्ण है। पूंजीवादी घटनाओं के लिए आदेश देने की अपनी ताकत का सबसे पहले ध्यान रखते है न कि अपनी पदवी का। उदाहरण के लिए बिल गेट्स या रॉकफेलर के लिए दुनिया को आकार देने में अपनी क्षमता या फिर अपनी विश्व दृष्टि पर आधारित निर्णय करवाने में ज्यादा दिलचस्पी होती है। समाजवाद के अंदर पूंजीवादी वर्ग भी ऐसा बनना चाहता है कि दूसरे लोगों की सोच की परवाह किए बिना वह अपनी ताकत का इस्तेमाल करे। पूंजीवाद के डीएनए का यही सार है।

जो लोग भाास्त्रीय फ्रेमवर्क का इस्तेमाल करते हैं, वे सोचते हैं कि पूंजीवाद को मापने का एकमात्र मापदंड है सामंती समाज से उत्पन्न पूंजीवादी समाज। लेकिन समाजवादी समाज में पूंजीवादी वर्ग के पूर्वज जो पूंजीवादी बनने की प्रक्रिया में हैं, बहुत ही अलग हैं। इसलिए यह अलग दिखता है। मुझे यह स्पष्ट करने दीजिए कि चीजों को अधिभौतिक तरीके से देखने वाले लोग इस सवाल को कैसे देखते हैंः यदि आप मैगट और केंचुए पर नजर डालें तब आपको लगता है कि ये दोनो एक ही गैर उड़ने वाले जीव से आते हैं। और मक्खियां तथा हमिंग बर्ड दोनों संभवतः उड़ने वाले जीव से आते हैं। यहां हम बस यह देखते हैं कि वे उड़ते हैं या नहीं। हां! उडना एक बड़ा अंतर है। लेकिन वास्तव में मैगट और मक्खी दोनों की प्रजाति एक ही है। इसलिए आप केवल यह नहीं कह सकते , ''अरे! मक्खियां या पूंजीपति दोनो सामंती समाज से आए। लेकिन मैगट पर नजर डालिए, वे तो उड़ भी नहीं सकते। वे कैसे पूंजीपति हो सकते हैं?'' यह हास्यास्पद है! यदि आप थोड़ा इंतजार करें तो मैगट भी मक्खी बन सकते हैं। अतः समाजवादी समाज में पूंजीपति भी अभी ''मैगट अवस्था'' में हैं। पूंजीवादी समाज में वे ''उड़ने की अवस्था''में पूंजीपति वर्ग के नाभिक का निर्माण करते हैं।

माओ की राजनीतिक विरासत

ओनुरकैन उल्कर : :अंतिम सवाल, माओ त्से तुंग के गुजर जाने के 40 साल बाद आम तौर पर माओवाद और खासतौर पर सांस्कृतिक क्रांति की क्या विरासत है?

फ्रेड एंगस्ट : माओ की विरासत... यह अद्भुत है। दुनिया में कहीं भी जनता जब पुरानी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए खड़ी होती है, तब उसको इन्हीं सवालों का सामना करना पड़ता है कि क्रांतिकारियों को नया शोषक बनने से कैसे रोका जाए? माओ के दौर को और खासकर सांस्कृतिक क्रांति को समझे बगैर, बिना यह समझे की माओ नें किस तरह इस समस्या से निजात पाने की कोशिश की, क्रांति और प्रति क्रांति का यह चक्र बरकरार रहेगा।

पेरिस कम्यून के बाद मार्क्स ने इससे सबक लिया। उनका कहना था कि सर्वहारा को बस सत्ता ही नहीं हासिल करना है बल्कि एक नयी म ाीनरी के निर्माण के लिए राज्य की पुरानी म ाीनरी को ध्वस्त करना है। लेकिन मार्क्स भी सत्ता में आने के बाद मजदूर वर्ग की विशेष भूमिका को खोजने में सक्षम नहीं हुए। उस समय वह उचित समय नहीं था। सालों के विचार के बाद लेनिन ने अंततः समझा कि केवल मजदूर वर्ग एक अनु ाासित वैनगार्ड पार्टी के गठन के द्वारा ही मजदूर वर्ग के व्यापक हिस्से को गोलबंद करने में सक्षम हो सकता है और वह उस पूंजीवादी वर्ग को परास्त कर सकता है जिनका समाज के आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों पर दबदबा है। अक्तुबर क्रांति के महज 4 साल बाद और 1919 में 4 मई के आंदोलन, जिसमें चीनी जनता उठ खड़ी हुई थी – के 2 साल बाद चीन में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ। इसका गठन कैसे हो इसके लिए उन्हें ज्यादा परेशान नहीं होना पड़ा। इस तरह लेनिन के योगदान ने चीनी क्रांति के पूरा होने वाले समय को कई–कई सालों कम कर दिया। सांस्कृतिक क्रांति का योगदान भी ऐसा ही है। अगली बार भविष्य में जब मजदूर वर्ग सत्ता पर कब्जा करने के लिए उठ खड़ा होगा तब उसे एकदम शुरू से शुरू नहीं करना होगा। उनको यह मालूम होगा कि हम उन गलतियों से कैसे बचें जो अन्य क्रांतिकारियों नें किया था। उदाहरण के लिए नौकरशाही विशेषाधिकार से कैसे बचा जाए और हिरावल पार्टी के उपर जनता की निगरानी कैसे रखी जाए।

समाजवाद में हिरावल पार्टी और जनता की निगरानी के बीच संबंध में भारी अंतर्विरोध है। आप इसके साथ–साथ नहीं जा सकते। माओ के अलावा तमाम समाजवादी सिद्धांत अब तक इस समस्या से निबटने में विफल हुए। स्टालिन जैसे कुछ लोगों नें जन निगरानी की अनदेखी की और केवल पार्टी के महत्व पर जोर दिया या सामाजिक जनवादियों नें केवल जनवाद के पहलू पर जोर दिया और हिरावल पार्टी की जरूरत को पूरी तरह नकार दिया। कोई भी अकेले काम नहीं करेगा। यही द्वंद्ववाद है। माओ नें यह कोशिश की कि किस तरह से दोनों को एक साथ समेटा जाए। लेकिन जबतक उनको अहसास होता थोड़ी देर हो गयी थी। चीन में पूंजीवादी राही काफी मजबूत हो चुके थे। उनको यह समझने में 1957–1962 के बीच 5–6 साल लगे कि वे लोग पूजीवादी राही हैं।

हमें यह समझना है किः क्रांतिकारी पूंजीवादी राहियों को तभी पहचान सकते हैं जब वे चहलकदमी करना भाुरू करें। आप मार्क्स के समय पूंजीवादी राहियों के बारे में नहीं सोच सकते थे। इस मुद्दे को समझने के लिए लेनिन भी काफी कम समय ही बचे। स्टालिन के पास एक मौका था लेकिन उन्होंने इसे खो दिया। उन्होंने वास्तव में निराश किया। एक नेता के रूप में ''वे बुरे हो सकते थे लेकिन तब भी वे हमारे थे।'' मेरे कहने का मतलब है कि स्टालिन नें कई भयानक गलतियां कीं। पूंजीवादी राही ठीक उनके नाक के नीचे पल रहे थे। उन्होंने बस उन्हें निकाला, जान से मार दिया, फांसी दी लेकिन उस समस्या का समाधान नहीं किया। हालांकि स्टालिन मजदूर वर्ग की सत्ता की सेवा में थे और उन्होंने पूंजीवादी पुनर्स्थापना की कोशिश नहीं की। इस तरह से उन्होंने भी उसी तरह गलतियां की जिस तरह से चीन की कम्युनिस्ट पार्टी में ढेर सारे कॉमरेडों ने की। मैं इन्हें, ''अचेतन पूंजीवादी राही'' कहता हूं। कुछ लोगों के काम करने का तरीका गलत था। कुछ लोग तुनकमिजाजी थे तो कुछ लोगों का झुकाव बॉस बनने की तरफ था... ये लोग जान बुझकर पूंजीवादी राह पर नहीं गए लेकिन उनकी मार्क्सवादी द्वंद्ववादी धारणा कमजोर थी। इसलिए वे पूंजीवादी

पुनर्स्थापना को उखाड़ फेंक नहीं सकते थे। स्टालिन बहुत स्पष्ट थे। उन्होंने न तो दूसरे लोगों पर विश्वास किया न ही जन दिशा अपनायी। परिणामस्वरूप उन्होंने केवल खुद की सुनी और अपने ही आचरण पर निर्भर रहे। उनको जब लगता था कि कोई गड़बड़ कर रहा है तब उन्होंने बस उसका सफाया कर दिया। इस तरह वे समस्याओं का समाधान नहीं कर पाये। जनता को गोलबंद किए बगैर जो समाधान आप निकालेंगे वह नौकरशाही के अंदर से ही होगा। यह उपर से नीचे जाने का तरीका है जो अंततः नौकरशाही शासन को ही फिर से मजबूत करता है।

मुझे लगता है कि स्टालिन कि त्रॉत्सकीवादी आलोचना भी अपना नि ाना खो देती है। त्रॉत्सकी नें भी वास्तविक समस्या को गलत तरीके से समझा। उनका समाधान भी सामाजिक जनवादियों की तरह हिरावल पार्टी को करना था। उनके लिए लोकतंत्र का मतलब ''मजदूरों के कांग्रेस'' इत्यादि से था। लेकिन उन्होंने इस बात की कोई चर्चा नहीं की कि मजदूरों को क्या करना चाहिए। जब उनके बीच अलग–अलग विचार हों। चीन में त्रॉत्सकिवादियों से बातचीत में मैं हमेशा इन समस्याओं को देखता हूं।

ओनुरकैन उल्करः सच में! क्या चीन में आज त्रॉत्सकीवादी आंदोलन भी है?

फ्रेड एंगस्ट : हां! वे हैं, मेरा मतलब है कि वे लोग पहले मजबूत नहीं थे लेकिन पिछले कुछ सालों में त्रॉत्सकीवाद यहां ज्यादा फैला है। मुझे लगता है कि इसकी वजह एक तरह से चीन के नौकरशाही की त्रॉत्सकीवादी आलोचना है। वह इनके लिए ध्यान आकर्षित करने का आधार बनाता है। वे केवल नौकर ाही से घृणा करते हैं। लेकिन चीनी त्रॉत्सकीवादी सांस्कृतिक क्रांति को नहीं समझ पाते। वे इसकी पूरी तरह अनदेखी करते हैं।

मओवाद की विरासत... यह काफी कठिन सवाल है। मुझे लगता है कि सांस्कृतिक क्रांति में इसकी ठोस दिशा है। ''जन दिशा'' जैसे साधारण मुहावरे माओ के योगदान को बताने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। सबसे पहले माओवाद, मार्क्सवाद–लेनिनवाद की ही उपलब्धि है। यह उससे पलायन नहीं है। दूसरी बात, यह समाजवादी समाज में वर्ग और वर्ग संघर्ष की एक समझ है। यह समाजवाद के अंदर वर्ग अंतर्विरोधों और दुश्मनागत संबंधों को हल करने में मार्क्सवाद–लेनिनवाद को आगे ले जाता है। समाजवाद एक लंबा ऐतिहासिक दौर है और इस दौरान वर्ग और वर्ग संघर्ष दोनों मौजूद रहते हैं। पूंजीवाद किसी भी समय वापस आ सकता है। और यही वास्तव में चीन में हुआ। मैं जो कह रहा हूं वह ''माओवाद'' के एक संस्करण के खिलाफ भी है। चीन में कुछ लोग मानते हैं कि आज पूंजीवादी नहीं बल्कि संशोधनवादी सत्ता में हैं। इसलिए हमें उन्हें हराने के लिए अंततः पार्टी संघर्ष को तेज करना चाहिए। लेकिन वास्तव में आज चीन एक औद्योगिक पूंजीवादी देश है और पूंजीवादी वर्ग सत्ता में हैं।

मुझे लगता है कि सवाल ''माओवाद की विरासत क्या है?'' ''मार्क्सवाद की विरासत क्या है?'' सवाल की तरह ही है। यह मुहावरे में कहा गया एक बड़ा सवाल है। कुछ लोग मार्क्सवाद को ''द्वंद्वात्मक भौतिकवाद'' के रूप में सूंश्लेषित करते हैं। कुछ लोग इसे ''वर्ग संघर्ष'' के रूप में संश्लेषित करते हैं। कुछ लोग इसे ''सर्वहारा की तानाशाही'' कहते हैं। लेनिन नें इसे ''जर्मन दर्शन, फ्रेंच समाजवाद और ब्रिटिश राजनीतिक अर्थशास्त्र का मेल'' कहा। इस तरह इसे सं लेषित करने के ढेर सारे अलग–अलग तरीके हैं। लेकिन मार्क्स की विरासत बरकरार है। इसी तरह माओ की विरासत भी बरकरार है...

ओनुरकैन उल्करः संक्षेप में कहें तो मैं वास्तव में आपसे पूछना चाहता था कि जो लोग 21 वीं सदी में दुनिया में समाजवाद का निर्माण करना चाहते हैं, उनको माओ के मरने के आधी सदी के बाद भी मार्क्सवाद में माओ के योगदान को ध्यान में रखने की जरूरत क्यों है?

फ्रेड एंगस्ट : यह बहुत जरूरी है! जिन चीजों का माओ ने अध्ययन किया और उससे पार पाने का रास्ता बताया, उसका सामना कहीं भी और किसी भी क्रांति के लिए लड़ने वाले को करना होगा। कुछ वि ोष जगहों में कुछ फर्क हो सकता है लेकिन सवाल यह है कि, ''पार्टी के अंदर के संघर्षों को कैसे चलाया जाए?'' उनके पास इसके लिए एक पूरी सिद्धांत और व्यावहारिक अनुभव है। उनका कहना है, ''मार्क्सवाद का व्यवहार करो न कि संशोधनवाद का।'' उनका कहना है, ''खुले बनो और अपने विचार खुलकर रखो न कि षडयंत्रकारीं।'' उनका कहना है कि ''एकताबद्ध को जाओ न कि विभाजित।'' उनका कहना है, ''आलोचना और आत्मालोचना के लिए खुले बनो।'' ये तमाम बातें क्रांतिकारी कतारों में संघर्ष और जनता के बीच में अंतर्विरोधों से संबंधित है। माओ कि टिप्पणी क्रांतिकारियों को गुटबंदी से पार पाने और एक साथ एकताबद्ध होने की समझदारी हासिल करने में काफी महत्वपूर्ण है। एकताबद्ध होने का मतलब अपनी राय को नहीं व्यक्त करना नहीं है बल्कि यह सहमति हासिल करने के लिए है। ये तमाम चीजें सांस्कृतिक क्रांति से पहले ही सूत्रबद्ध की गयीं थीं।

इस तरह माओ नें कई क्षेत्रों में योगदान दिया। माओ का योगदान दुनिया के बारे में महज सोचने वाले विद्वानों के योगदान से अलग है। कुछ लोग कहते हैं कि मार्क्स भी तो वैसे ही थे लेकिन मार्क्स तो एक सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। उन्होंने हरेक कदम के बाद अपने सिद्धांत में सुधार किया। उन्होंने केवल अध्ययन के लिए अध्ययन नहीं किया। माओ नें महज सिद्धांत में ही योगदान नहीं किया बल्कि क्रांतिकारी व्यवहार में भी योगदान किया। जो भी माओ को खारिज करता है, वह ज्ञान से भी ज्यादा दंभ दिखाता है। मुझे अभी तक कोई भी ऐसा विद्वान नहीं मिला जो माओ की आलोचना एक ठोस वस्तुगत परिस्थिति के आधार पर करता हो।

कुछ लोग माओ की आलोचना ''तीन दुनिया के सिद्धांत'' औस इस तरह की अन्य चीजों के आधार पर करते हैं। मैं उनकी बातों पर गौर कर सकता हूं। लेकिन उनको समझना होगा कि माओ भी चीजों को समझने की कोशिश कर रहे थे और उन्होंने जो देखा था उस समय बहुत ही सही मालूम होता था। सोवियत संघ उस समय सच में एक बड़ी चुनौती था, जो केवल चीन के लिए ही नहीं था। सोवियत संघ के विघटन से पहले किसी नें यह नहीं समझा था कि क्या होने वाला है? माओ का हमेशा यह मानना था कि एक सिद्धांत को व्यवहार के जरिए ही सही साबित किया जा सकता है। शुरूआती दौर में आपकी कई परिकल्पनाएं हो सकती हैं। माओ की भी थीं और वे उनपर काम कर रहे थे। उन्होंने कठमुल्लावादी दृष्टिकोण नहीं अपनाया। उदाहरण के लिए महान छलांग के शुरू में उन्होंने भी सामूहिकों में सामुदायिक रसोई का समर्थन किया। लेकिन कुछ ही सालों के व्यवहार के बाद उन्होंने वह विचार छोड़ दिया। मुझे लगता है कि माओ यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि सोवियत संघ के उभार के दुनिया के लिए क्या मायने थे। मार्क्स पूंजीवादी राहियों या फिर साम्राज्यवाद का विश्लेषण नहीं कर सके थे, ठीक? उसी तरह...माओ के पास भी सोवियत संध के विघटित होने से पहले तक उसके चरित्र के बारे में एक पूरी समझ नहीं थी। उन्होंने अपनी तरफ से इसे विश्लेषित करने की बेहतर कोशिश की। यदि बाद में उनकी सिद्धांत को लोग अतिरंजना तक ले गए, यह अलग बात है। मुझे नहीं लगता कि माओ नें कभी भी सोंचा था, ''हमें तमाम दूसरी चीजों को छोड़ देना चाहिए चूंकि सोवियत संघ सबसे बड़ी चुनौती है।'' जापान विरोधी युद्ध की उंचाइयों के दौर में भी माओ नें चांग काई भोक से हाथ मिलाया था लेकिन उन्होंने अपनी आजादी छोड़ने से इंकार कर दिया था। यहां ठीक वही वजह थी। यदि कोई भी माओ के सिद्धांतों को यांत्रिक ढंग से लेता है न कि द्वंद्वात्मक तरीके से तब ये माओ की गलती नहीं है।

ओनुरकैन उल्कर: वास्तव में, ''तीन दुनिया का सिद्धांत'' को तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचाने का काम माओ के गुजर जाने के बाद भुारू हुआ, खासकर 1977 में।

फ्रेड एंगस्ट :आपका ठीक कहना है। देंग नें इसे आगे बढ़ाया और तमाम चीजों को फिर से सजाने लगा। यदि सोवियत संघ सामाजिक साम्राज्यवादी भी था तब भी अमरीका और सोवियत संघ के बीच प्रतिद्वंद्विता का

फायदा दुनिया की जनता उठा सकती थी। उस समय की तरह ही जब माओ ने लाल सेना का गठन किया था। उस समय उन्होंने युद्ध सरदारों के बीच प्रतिद्वंद्विता का फायदा उठाया था। इसी तरह आप अपने को बचाते हैं। सोवियत संघ के ढह जाने के बाद जब अमरीका ने एक बार विशालकाय शक्ति हासिल कर लिया तब यह कुछ भी करने को आजाद हो गया। लेकिन मुझे अभी लगता है कि आप ''तीन दुनिया के सिद्धांत'' को यांत्रिक और कठमुल्लावादी तरीके से नहीं लागू कर सकते। इसका अधिकतर हिस्सा उन दिनों घटनेवाली घटनाओं का ही प्रतिबिंब है। बाद में यह हो ही सकता है कि माओ सोवियत संघ के खतरे को लेकर जरूरत से ज्यादा चिंतित थे क्योंकि वे उस साम्राज्य की कमजोरियों को नहीं देख रहे थे। और उसके लिए आप उनको दोष नहीं दे सकते। सोवियत संघ की वास्तविकता कोई भी नहीं समझ पाया था। लोग गलतियां करते हैं। मार्क्स नें गलतियां कीं, लेनिन से भी गलतियां हुई, स्टालिन ने तो ढेर सारी गलतियां की... मार्क्स और एंगेल्स नें ढेर सारी भविष्यवाणियां की जो सही नहीं निकली। लेकिन इन सबको लेकर उनके खिलाफ खड़ा होना काफी हास्यास्पद है।

ओनुरकैन उल्करः क्या आप इसे विडंबना ही कहेंगे कि जिस देंग नें ''तीन दुनिया के सिद्धांत'' को अतिरंजना तक पहुंचाया, जैसा कि आपने कहा, उसी देंग ने 1989 में दोनों देशों के संबंधों को सामान्य बनाने के लिए गोर्वाचेव के साथ अपनी भेंट में घोषित किया था कि चीन और सोवियत संघ का वैचारिक मतभेद कई मामलों में बचकाना था।

फ्रेड एंगस्ट : हां! जरूर। वह ट्रंप की तरह ही प्रगतिवादी था। ट्रंप एक दिन कोई चौंका देने वाली बात कह सकता है और अगले दिन अपनी पिछली बात को खारिज कर सकता है। यह कुल मिलाकर यह है कि कोई चीज जो आप करना चाहते हैं वो आप कैसे करते हैं। यही पूंजीवादी राजनीति है।

ओनुरकैन उल्करः अपना समय और जानकारी साझा करने के लिए आपका शुक्रिया। यह काफी ज्ञानवर्धक था।

फ्रेड एंगस्ट : शुक्रिया